॥ ओ३म् ॥

प्रभु से विनय

हे प्रभु! मेरे में वह महानता और सत्ता दो, कि मैं इस यज्ञ वेदी को, यहाँ भी अपनाता जाऊँ और सूर्य लोक में जाऊँ तो वहाँ भी इसी प्रकार की वेदी उत्पन्न कर, संसार को ऊँचा बनाता चला जाऊँ। हे देव! आप कल्याण करने वाले हैं। मुझे वह सत्ता दो। यदि मुझे आज्ञा मिले तो मैं ध्रुव मण्डल तक जाऊँ तो वहाँ भी यज्ञ वेदी का प्रसार करूँ। हे प्रभु मेरा जीवन यज्ञमय हो।

हे प्रभु! हमें वह बल दो, वह सत्ता दो, जिससे विधाता! हम संसार रूपी महान् वेदी की रक्षा कर सकें, जिस वेदी पर नाना प्रकार के खरदूषण जैसे दैत्य आ जाते हैं। हे देव! यहाँ ताड़का जैसे राक्षस यज्ञ वेदी को भ्रष्ट करने आ रहे हैं। हे विधाता! मैं चाहता हूँ वह ताड़का, आज मेरे द्वारा न आए, वह खरदूषण मेरे द्वारा न आएँ। आज विश्वामित्र और राम जैसे आ करके हमारी रक्षा करें। आज हमें इस भगवान् राम वाले सदाचार को अपनाना है जिससे यज्ञ वेदी की रक्षा होती है। दैत्यों को शान्त किया जाता है।

पूज्यपाद-गुरुदेव

अंक : 554 कुल पृष्ठ संख्या समग्र अंक : 629
वर्ष : 47 44 समग्र वर्ष : 53

अनुक्रम

क्रम संख्या	विषय	पृष्ठ संख्या
1. प्रभु से विनय	पूज्यपाद-गुरुदेव	3
2. अनुक्रम		4
3. आहार व्यवहार की महत्ता	पूज्यपाद-गुरुदेव	5-28
4. मानव उत्थान की प्रेरणा	पूज्यपाद-गुरुदेव	29-37
5. ऋषियों के उद्‌गार		38
6. दान, पुस्तकों की सूची व पुस्तक प्राप्ति के स्थान तथा सूचना इत्यादि		39-42

ऋग्वेद ब्रह्म पारायण याग

परमपिता परमात्मा की असीम अनुकम्पा से पूज्यपाद-गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज की सद्‌प्रेरणा एवम् आशीर्वाद से वैदिक अनुसन्धान समिति द्वारा प्रति वर्ष की भाँति इस वर्ष भी ऋग्वेद ब्रह्म पारायण याग का आयोजन आर्य समाज मालवीय नगर नई दिल्ली के प्रांगण में दिनाँक 7 दिसम्बर 2018 से 9 दिसम्बर 2018 तक बड़े हर्ष एवम् उल्लास के साथ आयोजित किया जा रहा है जिसमें आप सभी अपने सम्बन्धियों, मित्रों सहित सादर आमन्त्रित हैं।

वैदिक अनुसन्धान समिति (पञ्जी.)

आप सभी को दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएँ।

।। ओ३म् ।।

आहार व्यवहार की महत्ता

जीते रहो!

देखो मुनिवरो! आज हम तुम्हारे समक्ष पुनः की भाँति कुछ वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे। आज की हमारी ये पवित्र वेद वाणी, हमारा हृदय परमात्मा का अनुपम ब्रह्माण्ड है यह इतनी पवित्रता में परणित है, परन्तु जब परमात्मा मानव के जितना निकट है, परन्तु दृष्टिगोचर नहीं आता। वह प्रभु कितना विचित्र है और मानव की दृष्टि कितनी विचित्र बन चुकी है, जब कि आत्मा और परमात्मा का बहुत घनिष्ट सम्बन्ध है। वही आत्मा हमारे इस शरीर में, परन्तु प्रभु के दर्शनों का अभिलाषी है, दृष्टिगोचर नहीं आता है वह प्रभु। ये प्रभु ने कितने सुन्दर नेत्र रचे, कितनी सुन्दर वाणी, कितना सुन्दर यह गृह है। परन्तु प्रभु इनसे कितना दूरी और कितना निकट है, कितनी विचित्रता है उस प्रभु की महिमा में। बेटा! आत्मा, परमात्मा कितने घनिष्ट हैं परन्तु इस शरीर में आने के पश्चात् प्रतीत नहीं होता वह प्रभु कितना दूरी चला जाता है हमसे। यदि हम गम्भीरता से विचार विनिमय करते हैं तो वह प्रभु हमारे बहुत निकट भी है। परन्तु यहाँ हमारे नेत्रों में ऐसी स्थूलता आ जाती है क्या हम सूक्ष्म वस्तु को दृष्टिपात नहीं कर सकते। उनके लिए बेटा! सूक्ष्म तन्तुओं को जानने के लिए हमारे नेत्रों में यह दर्पण है जिससे परमात्मा को दृष्टिपात किया जाता है, जिसको सूक्ष्म से सूक्ष्म परमाणु को जाना जाता है। इन नेत्रों को बेटा! शनैः-शनैः हमें जल के द्वारा, जैसे मुनिवरो! पाप शुद्ध होता है, इसी प्रकार ज्ञान रूपी जल के द्वारा इन नेत्रों की दृष्टि को सूक्ष्म बनाना होता है क्योंकि इसमें प्रकृति के आवेश आने ही हैं।

ज्ञान का स्वरूप

बेटा! मैं आगे का विषय तो कल ही वर्णन करूँगा। महानन्द जी की एक प्रेरणा मुझे आज प्राप्त होती चली जा रही है, परन्तु विषय तो बहुत ही सुन्दरता से आज स्मरण आ रहा था, इसको सूक्ष्म सा और आगे ले जाना चाहता हूँ। मुनिवरो! ये नेत्र हमें शुद्ध बनाने होंगे, घ्राण हमें ऊँची बनानी होगी, परन्तु इनको ऊँचा बनाने के लिए हमें एक वस्तु की आवश्यकता है, और वह क्या है? ज्ञान। ज्ञान किसे कहते हैं? परन्तु ज्ञान का अभिप्रायः यह नहीं है कि हम पोथी की पोथियों को एकत्रित करले, उनका स्वाध्याय करते रहें तो उनसे ज्ञान प्राप्त हो। मेरा अभिप्रायः यह भी नहीं कि उन्हें न स्वाध्याय किया जाएँ। परन्तु ज्ञान किसे कहते है? वह बहुत सूक्ष्म सा शब्द है; जिसे कहते हैं ज्ञान। परन्तु ज्ञान कहाँ है और क्या है? वेदों की पोथी में भी ज्ञान है, परन्तु आरण्य सँहिताओं में भी ज्ञान है। परन्तु ज्ञान के ऊपर आचरण करना तो ध्यान है, यही तो लेखनी बद्ध की है ऋषि-मुनियों ने। यदि उनको अपने जीवन में धारण किया जाएँ, जीवन में धारण करने से ही हमारी सूक्ष्म और तीव्र बुद्धि बनती है। अन्यथा स्वाध्याय करते रहो, दूसरों को घृणा की दृष्टि से पान करते रहो, उसको ज्ञान नहीं कहते। ज्ञान किसे कहते हैं? बेटा! महर्षि पतंजलि और मुनिवरो! महर्षि जमदग्नि का एक शब्द है, एक समय महर्षि जमदग्नि से उनके पुत्र ने एक प्रश्न किया, उन्होंने कहा हे पिता! ज्ञान किसे कहते हैं? तो जमदग्नि ने कहा कि ज्ञान शब्द एक बिन्दु है, और वह हमारे शरीर में भी एक बिन्दु है जिसे प्रकाश कहते हैं, उस प्रकाश को जानने का नाम ज्ञान कहलाता है। इसका अर्थ क्या हुआ, ज्ञान, ज्ञान भी कहते हैं, परन्तु उसी के आश्रित हो करके जमदग्नि ने यह कहा क्या मैंने तो स्वयँ इतना ही जाना है, ज्ञान तो बहुत ही सूक्ष्म है। मेरे आदि आचार्यजनों! हमें संसार में पवित्रता लाने के लिए, उच्चता लाने के लिए उस ज्ञान को प्राप्त

करना है जिसे हमारे जीवन में हम धारण करते चले जाएँ, उसी का नाम ज्ञान कहलाता है।

दीपावली

आओ, अब हम महानन्द जी के वाक्यों पर चले जाएँ। आज उनकी प्रेरणा हमें, इन्होंने हमें द्वितीय काल में भी प्रश्न किया, वह इनके मनों की भावना, कल्पना थी। इन्होंने कुछ प्रभु के विषय में अपनी इच्छाएँ प्रगट कीं। मुनिवरो! दीपावली और भगवान् कृष्ण ने जो गोवर्धन इत्यादियों का पालन किया, आज मैं बेटा! ऋषि-मुनियों के वाक्यों पर ले जाना चाहता हूँ। इस वाक् को, हमारे यहाँ दीपावली का एक पर्व होता है। इसे महाभारत के काल से पूर्व, इसे दीप कहा जाता था। दीप आवली मानो दीपावली भी कहा जाता था। किन्हीं-किन्हीं स्थानों में दीपावली का अभिप्रायः क्या था? जो सर्व भूमण्डल में दीपावली का पर्व मनाया जाता है। आज तो प्रतीत नहीं कहाँ-कहाँ मनाया जाता है, पातालपुरी में क्या, नाना राष्ट्रों में दीपावली को राजा, महाराजा सभी इसका स्वागत किया करते थे। दीपावली का अभिप्रायः यह है जिसमें प्रकाश को लिया जाता है। भगवान् राम से पूर्व इसका कुछ और रूप था। भगवान् राम से पूर्व इसका यह रूप था कि हमारे यहाँ दो पर्व माने जाते हैं, एक होली का पर्व होता है, होलिका का पर्व, एक दीपावली पर्व होता है। इसमें लक्ष्मी का अवतरण भी होता है। परन्तु वह कृषि करने वाले जन, जब शरद ऋतु में पृथ्वी के गर्भ में बीज की स्थापना की जाती है, पृथ्वी के गर्भ में बीज की स्थापना की, तो वह किसी काल में यह नहीं विचारता कि इसका कितना फल प्राप्त किया। वह जब इस पृथ्वी के गर्भ में बीज की स्थापना कर देने के पश्चात् प्रभु से याचना की जाती है। बेटा! क्या उसमे पुरोहितजन, आचार्यजन प्रत्येक गृह में आओ, या वाणिक आओ, ऊँची-ऊँची वनस्पतियों को एकत्रित करो और सामग्री बनाओ।

परन्तु वेदों के साम वेदाः, जो उपासना काण्ड है, उस उपासना काण्ड की उपासना करो, यज्ञ और सामग्री के द्वारा देवताओं की। कहा क्यों? क्योंकि कृषि करने वाले वैश्यजन सब, जो भूमि में बीज स्थापित, स्थापित किया जाता था, स्थापित, उसमें से कुछ भाग को ले लिया जाता है और उस भाग को ले करके उसकी सबकी सामग्री बनाई जाती है। वनस्पतियों को सबको एकत्रित करके, सुन्दर सामग्री बना करके यज्ञ किया जाता है। प्रभु से याचना की जाती है, हे प्रभु! हमने जो पृथ्वी के गर्भ में जो भी अन्न इत्यादि इसके गर्भ में स्थापित कर दिया है बीज, यह हमारे लिए सुन्दर हो, यह हमारे राष्ट्र के लिए, मानवत्व के लिए लाभदायक हो। मुनिवरो! यह सुन्दर रूपों से उपासना की जाती है। मानो वैश्यजन सब यज्ञशाला के निकट विराजमान होते हैं, पुरोहितजन, राष्ट्र गृहणी मेरे राष्ट्र में अन्न हो जिससे मेरे राष्ट्र में अन्न की सूक्ष्मता न रहे। जब राजा, राष्ट्र गृहणी, उनकी पत्नी, उनके प्यारे पुत्र, पौत्र इत्यादि सब एकत्रित हो करके यज्ञन करते थे राजा के भाव, वह पुरोहित, भ्रमण प्राणी अति आहार अस्तुते राजनाः वह पुरोहित उसके अन्तःकरण में ध्यान करने वाले ज्ञान का भरण कर देते थे। परन्तु देखो, दीपावली आई तो उस तक आप कोई भी अशुद्ध कार्य न करो, यज्ञ करते रहो। मुनिवरो! देखो, यह हमारे यहाँ प्राचीन एक संस्कृति का प्रतीक है। आज मैं उस ऋषि प्राचीन मुनियों की परिपाटी को ले करके जब हम चलते हैं तो हमारा हृदय गद-गद होने लगता है। हमारे हृदय में एक मानवता प्रायः आती है, एक नवीन जीवन आता है इस ग्रीष्म ऋतु में, क्योंकि यह ग्रीष्म ऋतु हमें अमृत देती है। हमें अमृत देती है, स्वास्थ्य को सुन्दर बनाती है।

महर्षि महानन्द जी–इसको ग्रीष्म ऋतु ही क्यों कहते हैं?

पूज्यपाद-गुरुदेव–परन्तु वाक् यह अपने-अपने गृहों में उपासना पति सहित, पत्नी सहित विराजमान हो करके परमात्मा की उपासना

करनी है। हे परमात्मन्! हमारे कृषि को पवित्र बना, हमारी कृषि लाभदायक हो, इसमें किसी प्रकार का ऐसा परमाणु या किसी प्रकार का ऐसा स्वाङ्ग न छूए, जिससे यह नष्ट हो जाएँ मुनिवरो! देखो, यह उपासना की जाती थी।

उत्तम कृषि

इसके उपरान्त मानो यज्ञशाला में विराजमान हो करके अनुसन्धान किया जाता था। अनुसन्धान किया जाता है कि हमें अब इस कृषि को उपज करने के लिए क्या-क्या साधन जुटाने हैं। हमने पृथ्वी में, इसके गर्भ में बीज तो स्थापित कर दिया, अब इस पृथ्वी के लिए कौन सा खान-पान होना चाहिए। जिससे इसके गर्भ में जो कृषि उत्पन्न हो वह महान् और विशाल हो, ऊँची हो, और अधिक हो। मुनिवरो! उसके लिए उसी का प्रतीक हमारे यहाँ, परम्परागतों से उसके पश्चात् अनुसन्धान किया जाता। अनुसन्धान करके यह विचार विनिमय किया जाता, उसके लिए ऊँचे से ऊँचा उसका खान-पान होना चाहिए पृथ्वी का, वास्तव में पृथ्वी का खान-पान क्या होता है? पृथ्वी का खान-पान समय के अनूकुल उसको जल की वृष्टि, समय के अनूकुल उसको मुनिवरो! देखो, उसको गो का, मुनिवरो! गो अश्विनी मानो देखो, जो गो खा करके, निगलकर आहार को लेती है, चाट लेती है, उसको हमारे यहाँ खाद्याम् ग्रणा अस्ति आपांचात किया जाता है। उसको (गोबर को) संग्रह, संचित करने के पश्चात् मानो उसको पृथ्वी में भू में स्थापित किया जाता है जिससे मुनिवरो! देखो, पृथ्वी में उत्तम अन्न उत्पन्न हो और अधिक से अधिक हो। राष्ट्र में अन्न की सूक्ष्मता न रहे। मुनिवरो! अब अनुसन्धान करके और एक समारोह मनाया जाता है। सभी विद्वानों का, बुद्धिमान, वैज्ञानिकों का निर्णय करो कि पृथ्वी के लिए कौन सा अन्न देखो, अन्न को उपज करने के लिए, हमारे लिए कौन सी पृथ्वी के लिए, खान-पान होना चाहिए।

माता का आहार

जैसा मुनिवरो! मेरी पवित्र माता जब गर्भस्ति, हम जैसे पुत्र माता के गर्भ में होते हैं, तो माता के लिए हमारे बुद्धिमानों ने सुशील, ऊँचा और स्वस्थ बालक को उत्पन्न करने के लिए बुद्धिमानों ने एक चुनौती दी, और यह चुनौती दी कि माता को गर्भवती होने के पश्चात् क्या आहार, कौन सा आहार पाना चाहिए, देखो, जिससे उससे, गर्भ से सुन्दर बालक उत्पन्न हो। मुनिवरो! देखो, उन्होंने कहा आचार्यों का, वेदों और सँहिताओं में जो वर्णन होता है वह बड़ा विशेष और सुन्दर माना जाता है। ऋषि-मुनियों ने कहा भई! देखो, उनके लिए सबसे विशेष गो दुग्ध होना चाहिए। यह गो दुग्ध मुनिवरो! गो का दुग्ध, घृत को दूहने के पश्चात् माता के गर्भ से विशाल बालक जन्म लेता है, उसका स्वास्थ्य भी सुन्दर होता है। मुनिवरो! और भी जितने बालक होते हैं, उनको पाना ही मुनिवरो! देखो, सुन्दर और सुशील गृह में जन्म लेता है। इसी प्रकार आवृत्तियों में पृथ्वी की तुलना की है कि जैसे गो दुग्ध को पान करने से हमारा श्वास ऊँचा होता है, तो गो का, अप्रे अस्ता त्यागा हुआ जो मल होता है, जो गोबर होता है उसको पृथ्वी में स्थापित करने से अन्न उपज अधिक होता है। मुनिवरो! जो हमारे बुद्धिमानों ने दो प्रकार की उपज हमारे यहाँ होती है, एक उपज मेरी पवित्र माता जिसको हम शकुन्तका कहते हैं। शकुन्तका वास्तव में श्री, लक्ष्मी का नाम भी शकुन्तका कहा जाता है। परन्तु उस मेरी पवित्र माता का नाम भी शकुन्तका है जो बेटा! शास्त्र, दर्शनों के अनूकुल, अपने गर्भ से प्यारे पुत्र को जन्म देने वाली होती है। उसको भी हमारे आचार्यों ने आदरणीय, जैसे पृथ्वी को माता कहा जाता है, ऐसे ही उस गर्भाणि को माता की दृष्टि से पान किया जाता है। क्योंकि उसकी उपज होती है, बुद्धिमानों की उपज होती है। मुनिवरो! माताओं को उन पुत्रों की उपज नहीं करनी चाहिए जिसका पृथ्वी पर आ करके एक भार बन जाए।

पुरुषार्थी जीवन

वह देखो, मुनिवरो! भगवान् कृष्ण ने भी कहा है क्या जो अयोग्य मनुष्य होता है, जो अपने जीवन में पुरूषार्थ करना नहीं चाहता, केवल कर्म की कसौटी पर अपने जीवन को निर्भर करना जानता है, वह कोई मनुष्य नहीं होता, उस मनुष्य का भार होता है इस पृथ्वी पर। अपने जीवन में जो मनुष्य पुरूषार्थी नहीं होता, आलस्य होता है, प्रमादी होता है मानो उसके द्वारा त्याग और तपस्या नहीं होती उस मनुष्य का इस पृथ्वी पर भार होता है। उन मनुष्यों को संसार में जीवन धारण करने का अधिकर नहीं होता। मेरे आचार्यों ने ऐसा ही कहा है। मुनिवरो! इसी प्रकार मेरी पवित्र माता को हमारे प्राचीन काल में जब भगवान् राम से पूर्व का काल था, महाराजा सूर्य वंश से ऊँचा जो काल था, परन्तु उसमें ऋषि-मुनियों की एक परिपाटी चली आई और वह यह परिपाटी थी, गृह-गृह में पुरोहितपने का कार्य करना, परन्तु उन मेरी पवित्र माताओं को ऊँचा-ऊँचा उपदेश दे करके, उनसे ऋषि बालक जन्म लेते। परन्तु जमदग्नि जैसे और भी मुनिवरो! देखो, यहाँ महर्षि ध्रुन्द्री, जैसे नेत्रों का हीन भी कोई पुत्र होता, तो वह भी मुनिवरो! देखो, उसके हृदय में माता विद्या का भरण कर देती और माता उस विद्या का भरण करने के पश्चात्, वह माता का ऋणी बालक कहलाता था। ऋणी बालक मुनिवरो! वह ऋणी होता है, और जो अयोग्य बालक होता है, जो उत्पन्न होता है माता के गर्भ से, वह अयोग्य हो, तो जानो, माता का जीवन भी व्यर्थ और उसका पृथ्वी पर भार होता है।

गो दुग्ध

मेरे आदि आचार्यजनों यह ऊँचा बालक कैसे उत्पन्न होता है? जब मुनिवरो! माता गो दुग्ध का पान करती है, जैसे पृथ्वी में गो के मल को स्थापित करके, उससे शुद्ध और भूमि में उपज उत्पन्न की

जाती है अधिक, इसी प्रकार गो दुग्ध के पान करने से अधिक ऊँचा बालक, बुद्धिमान बालक जन्म लेता है। हमारे यहाँ परम्परा से मुनिवरो! देखो, आज से नहीं, ये परिपाटी ऋषि-मुनियों के काल से चली आई। भगवान् विष्णु इत्यादियों ने इस परिपाटी को निर्णय किया।

विष्णु राष्ट्र

हमारे यहाँ सबसे पूर्व भगवान् मनु जी के कथानानुसार, सबसे पूर्व यहाँ विष्णु उपाधि मानी जाती है। विष्णु उपाधि जो सबसे प्रथम राजा, उसी का नाम विष्णु कहलाता था। मुनिवरो! यह मनु जी से पूर्व एक परिपाटी थी, भगवान् मनु जी से पूर्व यह परिपाटी थी क्या, राष्ट्र तो होता नहीं, सेना नहीं होती थी। मुनिवरो! वहाँ और भी राष्ट्र के अधिपति नहीं होते परन्तु क्या होता था, कि विष्णु राष्ट्र होता था। विष्णु राष्ट्र क्या होता है? विष्णु से कोई भयभीत तो होता नहीं था, उसमें केवल कर्तव्य की प्रणाली की शिक्षा थी। कर्तव्य प्रणाली की शिक्षा को, मुनिवरो! देखो, सब आचरण करने वाले, उसको हमारे यहाँ विष्णु राष्ट्र अहा! भगवान् मनु जी से पूर्व यह था।

लक्ष्मी-पूजन

भगवान् मनु जी ने आगे चलकर राष्ट्र की प्रणाली को, मैं पूर्व उच्चारण भी कर चुका हूँ। आज तो केवल हमारे यहाँ महाराजा विष्णु ने यह परिपाटी संसार में निर्मित की, क्या लक्ष्मी का पूजन करो। कौन सी लक्ष्मी का पूजन करो? लक्ष्मी कहते हैं–हमारे यहाँ प्रकृति का नाम भी लक्ष्मी कहलाता है। प्रकृति का नाम लक्ष्मी कहलाता है, इस प्रकृति की भी पूजा करो क्योंकि इस प्रकृति से हमारा यह शरीर बना हुआ है, यह प्रकृति से बना हुआ है। हमारे नेत्रों में जो भी निर्णीत किए हुए यन्त्र हैं वह सब प्रकृति के धातुओं से बनते हैं, यह सब प्रकृति से उत्पन्न होते हैं। मानो देखो, अणु और महा अणु भी प्रकृति से

उत्पन्न होते हैं, तो उसका पूजन करो। तो हमारे यहाँ दीपावली और दीपावली को हमारे यहाँ देखो, उसका पूजन होता है। इसका परम्परागतों के अनूकुल हमारे यहाँ लक्ष्मी का पूजन किया जाता है। लक्ष्मी के पूजन का अभिप्रायः यह कि इसका पूजन करो। आज से हमें निर्णय करना है, दीपावली के दिवस यह जैसे प्रकृति जो कुछ हमें प्रकाश प्रतीत हो रहा है यह भौतिक प्रकाश यह सब प्रकृति का प्रकाश है। जैसे प्रकृति ने प्रकाशित तत्त्व हमारे मानव शरीर में ओत-प्रोत किए हैं, आज हमें उन तत्त्वों को जानना, उसी पर अनुसन्धान करना है। उसी से हमें अपने जीवन को ऊँचा बनाना है। लक्ष्मी का अभिप्रायः यह कि आज हमें वह प्रयत्न करना चाहिए, आज प्रभु की याचना करते हुए, लक्ष्मी का पूजन करो कि हम लक्ष्मी का दुरूपयोग नहीं करेंगे। लक्ष्मी राष्ट्रनायक होती है, राष्ट्रनायक कौन होती है? लक्ष्मी होती है। जिस राजा के राष्ट्र में लक्ष्मी नहीं होती, उस राजा का राष्ट्र भी नहीं होता। मानो राजा के राष्ट्र में लक्ष्मी होनी चाहिए। अब लक्ष्मी का पूजन होना चाहिए प्रत्येक गृह में, प्रत्येक मेरे माता पिता–क्यों इसका अभिप्रायः यह कि बिना लक्ष्मी के हमारा कार्य नहीं चलता। बिना लक्ष्मी के हमारे जीवन का लक्ष्य पूरा नहीं होता, हम दान नहीं कर सकते, हम यज्ञ नहीं कर सकते। मानो संसार का जितना भी कार्य है, हम उच्चारण नहीं कर सकते, हम नेत्रों से दृष्टिपात नहीं कर सकते, मुनिवरो! हम अपने श्रोत्रों से कोई वाक् श्रवण नहीं कर सकते, यह सब प्रकृति का, लक्ष्मी का एक चमत्कार कहलाता है। इस चमत्कार की हमें पूजा करनी है, परन्तु इसको हमें अच्छी प्रकार पूजन करना है। मुनिवरो! पूजन क्यों किया जाता है? आज हमारे द्वारा यह प्रश्न आता है कि पूजन करने का अभिप्रायः यह नहीं, हम आठों भुजों को एकत्रित करें, उसके आगे प्रार्थना, इसका यह अभिप्रायः नहीं है। हमें नियम बनाना है कि हमें इस लक्ष्मी का

दुरूपयोग नहीं करना है, हमें कहीं दुरूपयोग नहीं करना है। हमें दुराचारों में लक्ष्मी को प्रयोग नहीं करना है। हमें वैदिक प्रचारों में, हमें यज्ञ कर्मों में, परमात्मा की प्रार्थना में, ब्राह्मणों के सत्कार में बुद्धिमानों के और जहाँ भी हमारे लिए अधिक से अधिक कल्याण होता हो, हमें वहाँ लक्ष्मी को लगाना है। वहीं से प्रयोग में लाना है। आज के दिवस मुनिवरो! देखो, इसका एक नियम बनाया जाता है, इसके भाग बनाए जाते हैं लक्ष्मी के, जो भी लक्ष्मी गृह में होती है उसके भाग बनाए जाते हैं, कितनी लक्ष्मी मुझे परोपकार कार्य में लगानी है, कितनी लक्ष्मी मुझे अपने व्यापार में परणित करनी है, कितनी लक्ष्मी मुझे राष्ट्र के लिए अर्पित करनी है। इतनी लक्ष्मी मुझे पृथ्वी के लिए अर्पित करनी है। क्योंकि जिससे पृथ्वी में अन्न उत्पन्न हो। तो मुनिवरो! देखो, यह सब कुछ हमारे लिए लाभदायक कहलाता है।

आधुनिक काल में लक्ष्मी का दुरूपयोग

महर्षि महानन्द जी–गुरुदेव! आधुनिक काल में तो लक्ष्मी का कुछ और ही किया जाता है। आधुनिक काल में तो भगवन्! आज के दिवस क्या, कल के दिवस क्या भगवन्! इस लक्ष्मी का ऐसा दुरूपयोग क्या, भगवन्! आधुनिक काल में उसे जुए की दृष्टि से कहा जाता है और भी शब्द आधुनिक काल में प्रचलित है, मैं तो उनको शिक्षित नहीं कहा करता हूँ परन्तु आधुनिक काल में वो शिक्षित कहते हैं, उनको आधुनिक काल में फलैश कहते हैं, यह तो प्रभु! इसको अच्छी प्रकार नहीं ज्ञान कराया जाता, परन्तु उसको और ही कुछ उच्चारण किया जाता है। तो लक्ष्मी का आधुनिक काल में इसका नियम बनाने के पश्चात् इसका दुरूपयोग किया जाता है। पूज्यपाद-गुरुदेव–अच्छा बेटा! तो मुनिवरो! अभी-अभी मेरे प्यारे महानन्द जी कुछ मूर्खों वाले वाक् प्रगट कर रहे थे, परन्तु इससे मुझे अधिक प्रयोजन नहीं, केवल अपने विचार प्रगट करूँ।

दीपावली का पर्व

मुनिवरो! हमारे यहाँ प्राचीन प्रणाली, जो प्राचीन प्रणाली है, परन्तु वह इस प्रकार चली आई, आज हमें उस प्रणाली को अपनाना है जो प्रणाली हमारे ऋषि-मुनियों की नियुक्त की हुई है। वह विशेष कहलाई जाती है परन्तु आज हम उस प्रणाली को अपनाते चले जाएँ जिससे हमारी दीपावली, हमारे जीवन में एक पवित्र ज्योति जलती रहे। पवित्र ज्योति जो हमारे जीवन में जलते रहेगी तो हम दीपावली का पर्व मनाने के अधिकारी कहलाएँगे। जिसका अभिप्रायः यह नहीं कि यह दीपावली यह किसी एक राष्ट्र में अपनाई जाती हो, यह दीपावली प्रत्येक राजाओं के राष्ट्र में अपनाई जाती। इसके उपलक्ष्य में सभी कुछ हम अपने-अपने जीवन में कुछ न कुछ शिक्षा प्राप्त करते हैं, मानो कृषि करने वाले वैश्यजन यज्ञ करते हैं और यज्ञ करते हैं, क्यों? क्योंकि देखो, इस दिवस यह पर्व इसीलिए मनाया जाता है क्या कृषि, भूमि के गर्भ में हम अन्न की स्थापना कर देते हैं। इसमें बीज की स्थापना कर देते हैं, और देखो, सबसे निवृत्त हो करके अब प्रभु से याचना करते हैं, प्रभु! जो पृथ्वी में अन्न स्थापित किया है यह हमारे लिए लाभदायक हो, राष्ट्र के लिए, ऐसी अनुपम कृपा करो, समय-समय पर वृष्टि करो। समय-समय पर बुद्धिमानों की अनेक याचनाएँ बेटा! कोई महोत्सवों के द्वारा परम पवित्र पुनीत अवसर और पुनीत दिवस का निर्माण किया जाता है। हमारे यहाँ यह केवल एक पुनीत में निर्माण होता रहता है।

गोवर्धन

आज मैं उस दिवस पर आ पहुँचा, जैसा महानन्द जी मुझे कुछ वाक् भी प्रगट करने हैं। आज वह दिवस है, जब भगवान् कृष्ण ने देखो गोवर्धन की पूजा की, गोबर एक धन कहलाया जाता है। गोबर एक गो का मल कहलाया जाता है, उसको गोवर्धन कहते हैं। धन का

अभिप्रायः है इसे हम कृषि में अधिक से अधिक प्रस्थापित करने से, इससे धन उत्पन्न होता है, मानो आज भगवान् कृष्ण ने इस उपलक्ष्य में, आज के दिवस मानो देखो, इन्द्र को भी निमन्त्रण। इन्द्र ने कहा देखो, वहाँ इन्द्र की पूजा होती थी, गोवर्धन पर देखो, वह एक स्थान भी है, मानो जो वृन्दावन के रास्ते भगवान् कृष्ण के जहाँ जन्म भूमि परन्तु उसी के द्वार पर मानो देखो, वह एक स्थान गोवर्धन, जहाँ इन्द्र की पूजा होती है। इन्द्र की पूजा होती है।

भगवान् कृष्ण द्वारा गऊओं की पूजा

मुनिवरो! इन्द्र की पूजा हुआ करती थी। भगवान् कृष्ण से पूर्व इन्द्र की पूजा–जब इन्होंने बेटा! सब मानो देखो, गऊँओं को एकत्रित किया और गऊँओं की पूजा की गई। गोवर्धन पर वृन्दावन के मानो देखो, सभी उस पर्वत पर आ पहुँचे और वहाँ एक सुन्दर गऊँओं की पूजा होने लगी। गऊँओं के चरणों को, भगवान् कृष्ण का यह कार्य रहता था कि भगवान् कृष्ण प्रत्येक गऊँ के दुग्ध को पान करते थे, मानो एक-एक रूप में उनके दुग्ध को पान करते, उन्हें निर्णित किया करते थे। क्योंकि भगवान् कृष्ण अपने जीवन में एक बहुत ऊँचे वैज्ञानिक और अपने जीवन में अनुसन्धान करना उनका कार्य था। यह सबसे पूर्व उन्होंने यही अनुसन्धान किया, अपने राष्ट्र में, अपने समाज में, प्रजा में हमें सबसे यह पूर्व विचारना है कि हमारे राष्ट्र के लिए, हमारे जीवन के लिए, स्वास्थ्य के लिए सबसे ऊँची वस्तु क्या है? **सबसे ऊँची वस्तु यदि कोई संसार में, गृहस्थी के आश्रम में विचारने के लिए तो अपने स्वास्थ्य के लिए है।** जिस गृहस्थ में, जिस राजा के राष्ट्र में स्वास्थ्य ऊँचा होता है, स्वस्थ व्यक्ति होते हैं, वहाँ प्रशन्ता होती है। भगवान् कृष्ण ने सबसे पूर्व यह कार्य किया, तो गोवर्धन पर एक उन्होंने एक समाज एकत्रित किया, उस समाज में गऊँओं को एकत्रित किया, भगवान् कृष्ण का यह आदेश था, कि भई!

पूजन करो, किसका पूजन करो? गोवर्धन का—गऊँओं की पूजा करो। गऊँओं की पूजा करने से आज हमारा स्वास्थ, हमारी मानवता, इससे ऊँची बनेगी, इसीलिए गऊँओं का पूजन किया गया। मुनिवरो! देखो, भगवान् कृष्ण ने सबसे पूर्व देखो, गऊँओं का पूजन किया।

महर्षि महानन्द जी—गुरुदेव! आधुनिक काल में गऊँओं का पूजन किया जाता है।

पूज्यपाद-गुरुदेव—अरे भई! तुम सुनो, जो वाक् उच्चारण हुआ उसको सुनो, श्रवण करो। तो मुनिवरो! ब्रह्मा मय कस्मासि गो अस्वानि। मुनिवरो! गऊँओं का पूजन करने से हमें यह सब कुछ प्राप्त हो जाएगा, एक वस्तु प्राप्त नहीं होती। आज वह वस्तु प्राप्त होती है, उससे मुनिवरो! गऊँओं का दुग्ध पीने से हमारे जीवन में एक बुद्धिमानता आती है, श्वास ऊँचा होता है और गऊँओं के दुग्ध के पान करने पर, हमारे शरीर में जो नाना प्रकार के जो रुग्ण हो जाते हैं, वह भी नष्ट हो जाते हैं। नष्ट हो जाने के पश्चात् अहा! देखो, उससे हमारा स्वास्थ्य ऊँचा बनता चला जाता है। और वह जो कलिष्ट भोजन करने से मानव का स्वास्थ्य अङ्ग-भङ्ग हो जाता है, अङ्ग-भङ्ग हो जाने के पश्चात्—मुनिवरो! सबसे पूर्व यह विशेषता है गऊँ के दुग्ध पान करने में क्या मानव के जीवन में सदाचार की भावना आती है। प्रत्येक मानव, प्रत्येक देव कन्या के द्वारा दुराचार की भावना न आ करके सदाचार की भावना आती है। क्योंकि गऊँ के दुग्ध में वह परमाणु होते हैं, वह स्नेह होता है, जिस स्नेह से देखो, जो स्नेह गऊँओं में होता है। अहा, बेटा! देखो, गऊँओं में कितना भी क्रोध हो, परन्तु उस क्रोध में जब भी उन्हें एकत्रित होने का समय मिलेगा, तभी वह एकत्रित हो जाते हैं। इसी प्रकार उनमें कितना स्नेह होता है, ऐसे ही मानव मात्र में भी, इसी प्रकार का स्नेह हो जाता है। मेरे आदि आचार्यजनों! मेरे पवित्र भोले ऋषि मण्डल! उस भगवान् कृष्ण की

चर्चा प्रगट कर रहे हैं जिन्होंने बेटा! गऊँओं की पूजा की। हमारे यहाँ भगवान् कृष्ण से पूर्व भी देखो, गऊँओं की पूजा होती चली आई। गऊँओं की पूजा आज से नहीं परन्तु परम्परा से होती चली आई है। मुनिवरो! देखो, सर्वत्र संसार में गऊँओं की पूजा की जाती है, उसके दुग्ध को पान किया जाता है, घृत को पान किया जाता है, उसी में यज्ञ किया जाता है। देवताजन प्रसन्न होते हैं, वह समय-समय पर मुनिवरो! देखो, मानव को स्वास्थ्य देते रहते हैं।

गोवर्धन पूजन

महर्षि महानन्द जी–गुरुदेव! हमने ऐसा सुना है, जैसे आपने गोवर्धन का अभी अभी वर्णन किया है जब इन्द्र की पूजा नहीं होती थी, इन्द्र ने वृष्टि की और भगवान् कृष्ण ने गोवर्धन के पर्वत को ऊँचा अपने से ऊँचा उठाया था और वृन्दावन के जितने प्राणी थे सब उसकी छाया में चले गएँ।

पूज्यपाद-गुरुदेव–बेटा! यह इसका अभिप्रायः नहीं है कि इन्द्र ने वृष्टि की तो पर्वत को उन्होंने ऊँचा कर लिया। इसका अभिप्रायः तो यह भी हो सकता है क्या ऊँचा स्थान था, वृष्टि अधिक हुई और गोवर्धन के ऊपर बसने चले गएँ, यह भी हो सकता है। परन्तु यह नहीं, कि प्रकृति के नियम के विरूद्ध माना जाता है, परन्तु भगवान् कृष्ण परमात्मा के उस परमानन्द के बहुत निकट थे, बहुत निकट होने के पश्चात्, जो जिसके निकट होता है, वह प्रकृति के विपरीत कोई कार्य नहीं करता। भगवान् ने जो नियम बनाएँ हैं उनके विपरीत कोई कार्य नहीं करता। विपरीत कौन जाता है? जो बेटा! देखो, परमात्मा से दूरी हो जाता है और जो परमात्मा के जितना भी निकट होता है उतना ही वह प्रकृति के नियम को अङ्ग-भङ्ग नहीं करता, परमात्मा के नियम को नष्ट नहीं करता, वह उसके अनुकूल कार्य करता चला जाता है, स्वतः होता रहता है।

मेरे पवित्र आचार्यजनों! मेरे प्यारे महानन्द जी यह नहीं, परन्तु उनसे यह मान लेना चाहिए कि गोवर्धन से देखो, भगवान् कृष्ण ने गऊँओं की पूजा कराई। वहाँ इन्द्र की पूजा भी होती थी, परन्तु इन्द्र की पूजा को उन्होंने शान्त कराया, क्या इन्द्र की पूजा इन्द्र के राष्ट्र में होनी चाहिए। परन्तु इन्द्र ने उन्हें कष्ट देने का प्रयत्न भी किया, मानो देखो, बकासुर इत्यादियों ने उनको कष्ट देना प्रारम्भ किया। भगवान् कृष्ण ने अपने प्रकरण से, उनकी एकता से, उनकी मानव मात्र की सहायता से, छाया से, उसकी सेना को नष्ट किया, नष्ट करने के पश्चात्, परन्तु यह हुआ। आज हमें देखो, इन्द्र हम किसे कहते हैं? आज हम देखो, इन्द्र केवल उसको नहीं कहते जो सब राजाओं का राजा, परन्तु देखो, हम परमात्मा को इन्द्र कहा करते हैं। यहाँ इन्द्र यदि एक राजा को लिया जाए, तो वह वृष्टि क्या कराएगा, परन्तु देखो, वह अणु और परमाणुओं से वृष्टि करा भी सकता है। यह भी हो सकता है कि बहुत से यन्त्र ऐसे होते हैं, जो प्रकृति से निकासे जाते हैं। अनुसन्धान करने के पश्चात् कि वह अन्तरिक्ष में उनका प्रहार करने के पश्चात्, जल के द्वारा देखो, जलों का उत्थान हो जाता है उससे वृष्टि भी हो सकती है, परन्तु वह यन्त्र प्रकृति की नाना धातुओं से निकासा जाता है। मेरे आदि ऋषि-मुनियों! इसको तुम प्रत्येक जानता होगा कि भगवान् कृष्ण भी उस क्रिया को जाना करते थे, इन्द्र भी उस प्रक्रिया को जानते थे, परन्तु इन्द्र ने यह कराया, यह हो सकता है। परन्तु इन्द्र ने ऐसा किया नहीं था, यह अतिता यह मानव की एक कल्पना है। एक गोवर्धन को ऊँचा ले जाने के लिए, एक मानव की एक कल्पना है। यह एक श्रद्धांजलि और एक श्रद्धा का एक पाठ है। परन्तु यह इससे अधिक श्रद्धा से उसका वास्तविक वाक् का अङ्ग-भङ्ग हो जाता है। गोवर्धन की पूजा करने से मुनिवरो! देखो, भगवान् कृष्ण ने अपने जीवन का उत्थान किया, अपनी प्रजा को ऊँचा बनाया है।

देखो, भगवान् कृष्ण के यहाँ एक कार्य और भी होता था, नन्द की जितनी भी शोभा थी, मानो देखो, गऊँओं का सब घृत सब राजा कंस के द्वारा चला जाता था, राजा कंस के द्वारा जाता था। भगवान् कृष्ण को जो भी देवी उन्हें प्राप्त होती, जो भी माताएँ उन्हें घृत ले जाती प्राप्त होतीं, उन्हें दृष्टिपात होतीं उनसे छीन लेते और कहा करते कि यह कंस पापी है, तुम घृत को स्वयँ पान करो। मानो देखो, भगवान् कृष्ण ने यह कितने ऊँचे-ऊँचे कार्य किए, उन्होंने कहा कि कंस इतना दुराचारी है कि वह दूसरों के अधिकार को लेना चाहता है। संसार में उस व्यक्ति को नष्ट कर दो, जो दूसरों के अधिकार को छीनना चाहता है, दूसरे के अधिकार को छीनना यह मानवता नहीं कहलाई जाती है। इसीलिए हे मेरी पवित्र माताओं! हे मेरे पवित्र भद्रजनों! संसार में उस व्यक्ति को अपने द्वार पर न आने दो जो दूसरे के अधिकार को छीनने वाला हो, उसे अपने अधिकार के, उसे अपने जीवन का, अपने द्रव्य का, अपनी लक्ष्मी का स्वयँ देखो, उसे उसका अधिकार, उसका दायित्व बना रहे। इसीलिए आज मुनिवरो! देखो, भगवान् कृष्ण का एक-एक शब्दार्थ बड़ा महत्त्वपूर्ण है, हमें उन्हीं के आदेशों पर चलना चाहिएँ क्योंकि उनका आदेश आर्यत्त्व में परणित कहलाया जाता है। उन्होंने आर्य प्रणाली को, आर्य परम्परा को ऊँचा बनाने में अपने जीवन को समाप्त किया, अपने जीवन को सर्वत्र देखो, संसार में समृद्ध उनका जीवन व्यतीत होता रहा।

गणपति का पूजन

मुनिवरो! आज यहाँ दीपावली को, केवल गोवर्धन का ही पूजन नहीं होता है, गणेश का पूजन भी होता है। गणेश का अभिप्रायः यह है जहाँ लक्ष्मी का, जहाँ प्रकृति का, जहाँ गऊँ का पूजन किया जाता है, वहाँ परमपिता परमात्मा का पूजन भी किया जाता है। मुनिवरो! गणेश का पूजन क्यों किया जाता है? गणं ब्रह्मे अस्ति गणा। मुनिवरो!

देखो, जो गणों का स्वामी हो, गण संसार में प्रजा कहलाती है, उनका स्वामी गणपति कहलाता है। आज मुनिवरो! देखो, हमें गणपति की पूजा करनी है जिस गणपति के पूजा करने से हमारे हृदय में स्नेह आता है, हमारे हृदय में मधुरता आती है, हमारे हृदय में कर्तव्य की भावना आती है, हमारे हृदय में राष्ट्रीय भावना आती है। मानो देखो, यह सब भगवान् की पूजा करने से प्राप्त होती है। क्योंकि परमपिता परमात्मा ने संसार को एक राष्ट्र रूप में निर्माणित किया है। इसका वाक् तो मैं कल ही प्रगट कर सकूँगा अच्छी प्रकार से, परन्तु आज का आदेश तो केवल यह उच्चारण करता चला जा रहा है क्या हमें गणपति की उपासना करनी चाहिए। गणपति का पूजन करना चाहिए। हमारे यहाँ मुनिवरो! देखो, गणपति राजा को भी कहा जाता है। राजा का भी पूजन करना चाहिए, क्योंकि–राजा का पूजन क्यों किया जाता है? राजा के पूजन का अभिप्रायः यह नहीं, क्या उसके चरणों को छूआ जाए। राजा के पूजन का अभिप्रायः यह है क्या हम उसके प्रत्येक स्थानों से, बुद्धिमानों से, माताओं से और मेरी पुत्र पुत्रियों से राजा को यह प्रेरणा देनी चाहिए राजा के हृदय में, क्या हे राजन्! मेरी पवित्र माता को तो यह अधिकार देने चाहिए कि वह हमारा अधिपति है, तू गणेश है, तू राजा है, हमारे शृङ्गार की तू रक्षा कर। पुत्रियों को राष्ट्र के द्वारा राजा को यह संदेश देना चाहिए हे देव! हे राजन्! तू हमारा राजा है और हमारे जीवन का उपकार वास्तव में तो परमात्मा के ऊपर है, परन्तु कुछ तुम्हारे द्वारा भी है। इसीलिए हमारे विधाता, हमारे जीवन में जो भी मानवता आए, उसकी चुनौती आप लेते रहें। मुनिवरो! देखो, यह सब मानव के लिए ही, क्या संसार के राष्ट्र की रक्षा, राष्ट्र के नियम, राष्ट्र के जो भी कुछ अवृत्ति होते हैं, वह सब आपके भुजों में इन्हे अच्छी प्रकार बनाते रहो। यह सब मुनिवरो! देखो, एक प्रजा का कर्तव्य होता है। इसी परमात्मा की उपासना करना, गणेश जी की उपासना करना। महर्षि ने, महानन्द जी ने एक समय

ऐसा वर्णन किया कि गणेश जी तो महाराज शिव के पुत्र कहलाते हैं और जिनके द्वारा एक हाथी का एक बहुत बड़ा मुख उनके अनुसार परणित किया जाता है। मेरे आदि आचार्यजनों! महानन्द जी ने मुझे एक समय ऐसा प्रगट कराया। परन्तु इसके साथ-साथ मैं यह वाक् प्रगट करता चला जाऊँ कि देखो, गणेश जी का ऐसा नहीं, परन्तु गणेश जी महाराज शिव के पुत्र भी थे। परन्तु यहाँ गणेश जी भगवान् को कहा जाता है। जो हाथी इतना विशाल होता है, इतने विशाल शरीर वाला होता है, मानो देखो, वह कितने ही अन्नों को, कितने ही वनस्पतियों को अपने उदर में ओत-प्रोत कर लेता है, उसी से उसका जीवन संचार होता है। इसी प्रकार हमारे यहाँ परमात्मा के द्वारा देखो, यह सर्वत्र भूमण्डल होने के नाते, यह सर्वत्र भूमण्डल उसका है। नाना प्रकार के लोक-लोकान्तर हैं, यह सब देखो, परमात्मा के गर्भ में परणित हो रहे हैं, सब प्रकाशित हो रहे हैं। उसी की प्रेरणा, उसी का पाठ, उसी के मुनिवरो! एक-एक, कण-कण में परमात्मा के, गणेश के व्यापक होने के नाते, उन सबका अधिपति होने के नाते अहा, उसका देखो, इतना विशाल मस्तिष्क भी है। उसका इतना विशाल उदर भी है, मानो देखो, वह सबको अपने में परणित कर देता है। मुनिवरो! प्रलय-काल में भी सबको निगल जाता है। अपने गर्भ में, अपने उदर में सबको परणित कर लेता है। मुनिवरो! उसका इतना विशाल उदर है, इतना विशाल उसका मुखारबिन्द है। मुनिवरो! देखो, जिससे परमात्मा को हमारे यहाँ गणेश जी कहा जाता है। गणेशा ब्रह्मणे जो गणों का स्वामी हो, गणों का स्वामी हो मानो देखो, नाना प्रकार के लोक-लोकान्तरों का स्वामी हो, उसको हमारे यहाँ गणपति की चुनौती दी जाती है। अहा, भगवान् शिव के पुत्र का नाम भी गणेश जी है, ऐसा अभिप्रायः यह नहीं कि किसी के पुत्र का नाम गणेश जी हो तो परमात्मा को गणेश जी नहीं कह सकेंगे। अहा, मुनिवरो! देखो, जहाँ भगवान् को गणेश जी कहा जाता है, किसी के पुत्र का नाम भी हम

गणेश उच्चारण कर सकते हैं। क्योंकि वह तो एक गौणिक नामों से परणित किया जाता है।

परम्परावादी संस्कृति का महत्त्व

मेरे आदि आचार्यजनों! आज मैं यह चर्चा कर रहा था कि आज दीपावली के पर्व में और गो की पूजा करने के दिवस से हमें भगवान् कृष्ण और हमें अपनी परम्परा को विचारना है। जो संसार में देखो, परम्परावादी संस्कृति को नहीं विचारता, आह, उसका जीवन एक भार रूप में माना जाता है। संसार में आलसी और प्रमादी बन करके अपने जीवन को हमें व्यर्थ नहीं करना है। परन्तु देखो, आज हमें सभी वाक्यों पर विचार करना होगा, जैसे हम भूमि की रक्षा करते हैं। मुनिवरो! इसी प्रकार मेरी जो पवित्र माता है, जिसके गर्भ से हम जैसे पुत्रों का जन्म होता है, भगवान् कृष्ण, भगवान् राम, महाराज शिव मुनिवरो! देखो, अनेकों अनेक महान् विभूतियों का जन्म होता है। जैसा मुनिवरो! देखो, यहाँ ऋषि-मुनियों का जमदग्नि, जैसे महर्षि पारा, महर्षि लोमश, महर्षि कणाद, आदित्य ऋषि महाराज, महर्षि अङ्गिरा इत्यादि आचार्य ऋषिजन हुए, यह सब मेरी पवित्र माताओं के गर्भ से जन्म लेते हैं जिनके बड़े सौभाग्य होते हैं। जिनकी त्याग और तपस्या में एक आहुति है, त्याग और तपस्या से मानव की माता की प्रवृत्तियों से, मानव के अन्तःकरण में उनकी भावनाओं से देखो, उससे पुत्रों का जन्म होता है। मुनिवरो! देखो, इससे हमें सभी वाक्यों पर विचार करना है। हमें जब हम प्रत्येक वाक् पर हम अपने परम्परावादी जो हमारी प्राचीन ऋषि-मुनियों की प्रणाली है।

भगवान् राम का अयोध्या में आगमन

आज भगवान् राम, भगवान् राम देखो, यह वह भी दिवस है जब भगवान् राम, माता सीता और हनुमान मुनिवरो! देखो, लक्ष्मण इत्यादि

देखो, लंका को विजय करके अपनी अयोध्या में आ पहुँचे थे, अपनी अयोध्या में आने के पश्चात् मानो देखो, मुनिवरो! देखो, जब राजा रावण को विजय किया, विजय करने के पश्चात्, लंका का राष्ट्र उनके विधाता विभीषण को लंका का स्वामी बना करके, पुष्प विमान में विराजमान हो करके, अपनी अयोध्या में लौट आए। परन्तु आज का देखो, वह दिवस, आज नहीं, परन्तु आज का तो वह दिवस है लंका को विजय करके, जब भगवान् राम ने माता सीता ने लक्ष्मण ने हनुमान ने विराजमान हो करके देखो, भरत ने इत्यादि शत्रुघ्न ने माताओं के सहित और गुरुजनों के सहित मानो यज्ञ किया। आज वह दिवस है, परन्तु प्रत्येक प्राणी को यह ज्ञान हो गया कि आज भगवान् राम लंका को विजय करके आ रहे हैं। उस समय प्रत्येक गृह में जो दीपावली का पर्व जो कृषक देखो, कृषकों के हृदयों में क्रान्ति स्थापित हो चुकी थी, क्या भगवान् राम नहीं आएँगे, न प्रति क्या होगा। परन्तु जब यह प्रतीत हुआ वैश्यजनों को भी, राम की विजय हो गई है, लंका से आ गएँ हैं, उसी समय अयोध्या में एक प्रकाश, सर्वत्र एक आनन्द के उनके हृदयों में क्या मुनिवरो! देखो, आनन्द के गीत प्रकाशित हो गए। बेटा! वह लंका में भी वह पर्व मनाया गया, परम्परा के संस्कृति के अनुकूल मनाया गया। परन्तु रहा देखो, अयोध्या में, भगवान् राम, सीता और लक्ष्मण, हनुमान जब वह अयोध्या में आए, तो भरत ने राम के चरणों को छुआ, उन्होंने सीता के चरणों को स्पर्श किया और उनके स्नेह की, उनके प्रेम की कोई सीमा नहीं थी। बेटा! जैसे दीपावली के दिवस मानव अपने गृहों को प्रकाशित करता है और अपने मनों को प्रकाशित करता है, इसी प्रकार महाराजा भरत और शत्रुघ्न और माताओं का जो हृदय था वह इतना प्रफुल्लित हो गया, इतना प्रकाशमान हो गया कि दीपावली और सूर्य का प्रकाश भी उनके आगे अन्धकारमय प्रतीत होता था। मेरे आदि आचार्यजनों! यह प्रेम का प्रतीक है, यह हमारा आदर का प्रतीक है। भरत ने जब सीता के चरणों को छुआ, उस समय कहा मातेश्वरी! मुझे आपकी बड़ी प्रतीक्षा थी मेरे

नेत्र थकित हो गए, मेरी दृष्टि सूक्ष्म से सूक्ष्म हो गई आपको दृष्टिपात करते-करते, यह बेटा! कितना ऊँचा आदेश था मेरे उन ऋषि-मुनियों का, महान् विभूतियों का। आज मुझे बेटा! ऐसा प्रतीत हो रहा है, जैसे आज अयोध्या में वाक् उच्चारण कर रहे हों। बेटा! आज यह आर्यों वाले वाक्यों को हमें पुनः से प्रकाशित करना है। इतना समय हुआ इस प्रतीक से आज हमें इससे कुछ शिक्षा प्राप्त करनी है। जिन शिक्षाओं को ले करके हम आज गऊँओं का पालन क्या, दीपावली का पर्व क्या, इनको हम अपने जीवन में धारण करें और इनको हम अपने जीवन में कुछ न कुछ अच्छाईयों को अपनाते चले जाएँ।

मानसिक विचारों का प्रभाव

महर्षि जमदग्नि ने जितनी सूक्ष्मता का परिचय दिया परन्तु वह एक महान् सराहनीय है। जब महर्षि जमदग्नि की पत्नी के विचार देखो, विचारों में एक महान् देखो दूषित क्रान्ति आ गई, दूषित क्रान्ति आ गई तो अपने पुत्र पर प्रहार कर रहा है। क्यों? क्योंकि उन्होंने कहा कि मैं अपने गृह को, मैं अपने आश्रम को श्मशान भूमि नहीं बनाना चाहता हूँ, मैं इसको ऋषि की भूमि बनाना चाहता हूँ। मुनिवरो! देखो, यह उस ऋषि के विचार हैं, ऋषि के विचार बहुत सूक्ष्म हैं। इसी प्रकार यदि प्रजाओं के विचार एक दूसरों के नष्ट करने वाले हो जाते हैं और एक दूसरे को नष्ट करना, अपने उदर की पूर्ति हो दूसरा नष्ट हो जाएँ या कुछ हो, इस प्रकार के विचार बन जाते हैं तो क्या होता है? यह विचार जमदग्नि के कथनानुसार, यह विचार सब अन्तरिक्ष में रमण करते हैं और जब अन्तरिक्ष में रमण करते हैं, अहा, सूर्य की किरणें आ करके मिलती हैं, जल के परमाणु जाते हैं, अग्नि के तीक्ष्ण परमाणु जाते हैं, वायु का मिलान होता है, उनका जब आपस में देवताओं का, देवताओं का एक समाज एकत्रित होता है और देवताओं के द्वारा यह मानसिक विचार जाते हैं, देवता इनको

सींचते हैं। सींच करके क्या होता है? क्या देवता इनके लिए, इनके विचारों को द्वितीय रूपों में परणित कर देते हैं। बेटा!। पहले प्रकृति के आक्रमण होते हैं तो किसी राष्ट्र में देखो, राष्ट्रीय संग्राम हो रहा है, तो कहीं मुनिवरो! देखो, अकाल पड़ रहे हैं, कहीं वृष्टि नहीं होती, वृष्टि होती है तो अनावृष्टि होती है। यह सब देखो, मानव के मानसिक विचारों का आहार और व्यवहार का फल कहलाता है। यह महर्षि जमदग्नि का कथन है। महर्षि जमदग्नि के विचार बेटा! एक महान् विचार कहलाए जाते हैं। हमारे ऋषि-मुनियों ने महर्षि जमदग्नि को विचारधारा में सबसे अग्रगणीय माना है। अग्रगणीय माना है, कारण क्या है? क्या उनके विचार, वह अपनी मानसिकता को ऊँचा बनाने के लिए, अपने सूक्ष्म विचार संसार को देते हैं। उन विचारों का यह परिणाम रहा, क्या उनके वाक् उच्चारण करने का आज हमें पुनः से सौभाग्य प्राप्त हो रहा है।

मेरे आदि आचार्यजनों मैं केवल यह शब्द उच्चारण कर रहा था, वह यह क्या हमें उन सब वाक्यों के विचार करने का अभिप्रायः यह मानवता और हमारा विचार ऊँचा होना चाहिए, विचित्र से विचित्र होना चाहिए, जिससे मुनिवरो! देवताजनों की गोष्ठी में भी, उनके समाज में भी हमारे विचार चलें, हमारी भावना जाएँ, तो वह हमें विष न दें। दैत्यों में परणित नहीं करना है। जिससे बेटा! हम देवता बनें और देवताओं के समाज में पहुँचे। देवता वाले विचार बन करके, हमारे लिए बेटा! हम अमृत देने वाले बनें, विष न तो किसी को दें। अरे! किसी को विष देंगे तो विष हमें अवश्य प्राप्त होगा। अमृत देंगे, तो परमपिता परमात्मा के इस कल्प वृक्ष के नीचे विराजमान हैं, हम किसी को अमृत देंगे तो अमृत ही सीचेंगे। विष देंगे तो विष ही सीचेंगे। इसीलिए हमें संसार में क्यों न अमृत देना चाहिए? यह है बेटा! आज का हमारा आदेश। आज का आदेश यह समाप्त होने जा रहा है, कल समय मिलेगा तो मैं शेष चर्चाएँ कल भी प्रगट कर सकूँगा।

महर्षि महानन्द जी–गुरुदेव! आपका विचार कुछ सुन्दर भी लगा और कुछ असुन्दर भी लगा।

पूज्यपाद-गुरुदेव–अरे! क्यों?

महर्षि महानन्द जी–भगवन्! हमारे यहाँ प्रश्न का वाक् आता है, आप वहाँ उस वाक् को मिला जाते हैं।

पूज्यपाद-गुरुदेव–हास्य.... अरे! क्यों?

महर्षि महानन्द जी–भगवन्! अभी-अभी आप से प्रेरणा रूपों में प्रगट किया कि माँस आहार करना बहुत अनिवार्य है।

पूज्यपाद-गुरुदेव–'बेटा! तुम किया करो, उसमें क्या है, हमें तो इससे कोई विरोध नहीं, परन्तु हमें तो महान् आत्माओं के विचार तुम्हारे समक्ष प्रगट किए और जैसा तुमने बनना है, वैसे बनते चले जाओ।

महर्षि महानन्द जी–भगवन्! यह तो हमारे प्रश्नों का कोई उत्तर नहीं है, हमारे प्रश्नों का एक यही उत्तर तो अवश्य देते चले जाइए, अभी आप ने कहा अमृत दोगे, तो अमृत प्राप्त होगा।

पूज्यपाद-गुरुदेव–हास्य .... नहीं महानन्द जी! यह बेटा! विनोद क्या करने लगे, आज के हमारे आदेशों का जो शीर्षक था, वह यही था कि अपने महान् विचारों के लिए हमें अपने आहार और व्यवहार पर अवश्य अनुसन्धान करना चाहिए। तुम बेटा! हर समय विनोद की चर्चा प्रगट करते हो, हर समय विनोद का नहीं होता, समय मिलेगा तो तुम्हारे प्रश्नों का उत्तर कल दिया जाएगा।

महर्षि महानन्द जी–अच्छा भगवन्! जैसी आज्ञा।

पूज्यपाद-गुरुदेव–तो मुनिवरो! आज का यह आदेश समाप्त होने जा रहा है। आज के आदेशों का अभिप्रायः क्या हमारा, कि हमें अपने

आहार व्यवहार सूक्ष्म सा विचार का, यह हमें सब उत्पन्न करना है, यदि हमें अपने राष्ट्र को, अपनी मातृ भूमि को ऊँचा बनाना है, तो हमें पुनः मानसिकता को उत्पन्न करना है जिससे हमारे द्वारा स्नेह एक दूसरे में एक दूसरें के विचार से अवगत होते हों। तो हम कर्तव्य की भावनाओं में संलग्न, राष्ट्रवाद, मानसिकवाद सब हमारे द्वारा परणित हो करके, हम परमपिता परमात्मा की छत्र छाया में पनपते हैं, उसी की छत्र-छाया में हम अपने विचार को ऊँचा बनाते चले जाएँ। यह आदेश आज हमारा समाप्त हो गया, कल समय मिलेगा, तो मैं शेष चर्चाएँ कल प्रगट करूँगा। आज का आदेश समाप्त होता गया कल शेष चर्चाएँ प्रगट करेंगे, अब वेद का पाठ होगा।

वेद पाठ .....

महर्षि महानन्द जी–अच्छा भगवन्! आज्ञा!
पूज्यपाद-गुरुदेव–'आनन्द मङ्गलम् भवति।

दिनाँक : 31 अक्टूबर, 1965
समय : रात्रि 8 बजे
स्थान : आर्य समाज जङ्गपुरा, नई-दिल्ली

आवश्यक सूचना

सभी वार्षिक सदस्यों को सूचित किया जाता है कि जिन सदस्यों ने अभी तक वार्षिक सदस्यता की राशि जमा नहीं की है वह कृपया करके मनीआर्डर द्वारा समिति के कार्यालय में या प्रकाशन मन्त्री/कोषाध्यक्ष को वार्षिक सदस्यता की राशि भेज दें जिससे कि पत्रिका निरन्तर प्रेषित होती रहे।

।। ओ३म् ।।

मानव उत्थान की प्रेरणा

जीते रहो!

देखो मुनिवरो! अभी-अभी हमारा पर्ययण समय समाप्त हुआ। हम तुम्हारे समक्ष कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गान गाते चले जा रहे थे। आज का हमारा वेद मन्त्र तुम्हें प्रकाश के मार्ग को प्रगति कराता चला जा रहा था। आओ! हम भी चले जाएँ और उसी प्रकाश में हम भी प्रकाशमान होते चले जाएँ। जो प्रकाश उस परमदाता ने, आनन्ददायक प्रभु ने जो विचित्र वाणी मानव के समक्ष निर्मित की है, हम भी उस वाणी को शब्दमयी ध्वनि करते चले जाएँ और वह ध्वनि हमारे अग्रगणीय भाग में हो, और हम उस ध्वनि के पश्चात् हों। हे परमात्मन्! आपकी यह कितनी अनुपम ध्वनि है, जब हम इस ध्वनि का उच्चारण करते हैं तो कितनी अनुपम ध्वनि है ये, जिस ध्वनि से यह पृथ्वी मण्डल ही नहीं, सूर्य मण्डल और ध्रुव, चन्द्र इत्यादि सभी उसका वर्णन किया करते हैं। इनके ऊपर जो अनुसन्धान वाणी के सहित किया जाता है और भी इसमें हमें विचित्रता प्रतीत होती है, परन्तु वह कितनी अनुपम विचित्रता है। हम जब सूर्य मण्डल के आगार उसका प्रदर्शन दृष्टिपात करते हैं, तो हमें कुछ और ही विचित्रता प्रतीत होती है। परन्तु देखो, कहाँ यह सूर्य की विचित्रता और भी हम जब सप्त ऋषि मण्डलों के द्वारा, उनके ऊपर हमारा विचार विनिमय होना प्रारम्भ होता है और हमें विचित्रता प्रतीत होती है। परन्तु हम, सप्त ऋषि मण्डल को भी त्याग देते हैं, बृहस्पति और ध्रुव पर जहाँ तक हमारी आकर्षित जाती है, हमारा निर्णय किया हुआ सिद्धान्त, वह और ही गम्भीरता से विचार विनिमय, विचित्रता प्रतीत होती है। मुनिवरो! जहाँ उनके हम तत्त्व प्रधानता को लेते हैं और भी

हमें विचित्रता प्रतीत होती है। हम जब पृथ्वी मण्डल की पार्थिवता और मानवीयता के ऊपर विचार विनिमय करते हैं तो हमें बेटा! एक ऐसा हमें अनुभव होता है, हमारे मस्तिष्कों में ऐसी क्रान्ति उत्पन्न होती है जिससे हम हताश हो जाते हैं, और हताश हो करके यह कहा करते हैं कि परमात्मा विचित्र है। वह कलाकार विचित्र है। परन्तु यहाँ नास्तिकवाद कहता है, नास्तिकवाद का पाठ और ही कुछ है।

नास्तिकवाद

मेरे प्यारे महानन्द जी ने एक समय मुझे नास्तिकवाद की चर्चा प्रगट की। उन्होंने कहा नास्तिकवाद यह स्वीकार करता है, क्या यह जो भी कुछ हमें प्रतीत हो रहा है, ये सब पञ्च महाभूतों का ही एक चक्र है, न तो परमात्मा ही कोई वस्तु है, परन्तु कोई ऐसा, जिसको अनुपम या विचित्र हम उच्चारण कर सकते हैं, वह कोई नहीं है। परन्तु देखो, मानव की एक इस प्रकार की लोलुक्ति है, क्या जिसको मानव विचारता रहता है। परन्तु यदि मैं उन नास्तिकों से प्रश्न करूँ क्या, तुम इन पञ्च महाभूतों की आकृति को स्वीकार करते हो, जल में भी तो पञ्च महाभूत हैं। मुनिवरो! अग्नि में भी पाँचों मिश्रित हैं, वायु में भी पाँचों मिश्रित हैं और पृथ्वी में भी। आज ये भी उनसे प्रश्न करूँ कि तुम्हारे द्वारा यह ज्ञान और यह चेतनता कहाँ से आ पहुँची? तो उत्तर मिलेगा कि पञ्च महाभूत जो एक स्थान में मिलान हुआ है। उन पाँच महाभूतों में से नाना प्रकार की मात्राएँ हैं, जो उत्पन्न हो करके मनुष्य का शरीर बन जाता है। यह संसार जिसमें शारीरिक प्राणी होते हैं उन सबका ही जीवन संचार होने लगता है। मुनिवरो! उनसे यह प्रश्न किया जाए, क्या तुम सृष्टि की रचना को स्वीकार करते हो या नहीं। वह उत्तर देंगे की स्वीकार तो अवश्य करते हैं, परन्तु यह स्वयँ ही रच जाती है, इसको रचाने वाला कोई तत्त्व नहीं है। मेरे आदि आचार्यजनों! जब ऐसे-ऐसे विलक्षण उत्तर हमें प्राप्त होते हैं

परन्तु उसमें यह भी विचार विनिमय किया जाता ह, कि आत्मा कोई चैतन्य नहीं, इन पाँचों तत्त्वों से लेकर प्रकृति और चैतन्य के महत् के मिलान से ही तृतीय वस्तु, प्रकृति उत्पन्न हो गई। तृतीय नाम इसका यह गौणिक नाम, यह प्रकृति नाम नियुक्त किया गया। इसी प्रकार ये पञ्च महाभूत मिले, पञ्च महाभूतों के मिलान से यह हमारा शरीर, मनुष्य शरीर बना और जैसे सृष्टि उन दोनों का ही रूप माना जाता है। परन्तु हम तो यह भी तो प्रश्न करते हैं कि तुम चैतन्य प्रकृति को स्वीकार करते हो या नहीं। परन्तु आगे वह उत्तर देते हैं कि यह तो हमारी लोलुक्ति, परन्तु इसका समाधान यह कि चैतन्य सत्ता कोई नहीं होती, केवल प्रकृति होती है। यह स्वयँ ही चलता है। मुनिवरो! यह तो हमें हमारे हृदय को सन्तुष्टि नहीं हुई।

वास्तविकता

परन्तु वास्तविकवाद तो यह है कि इस ज्योति से हमें कुछ प्रतीत हो रहा है। सूर्य मण्डल है, तारा मण्डल इत्यादि नाना प्रकार के जो मण्डल हैं, इनके रचाने वाला, मनुष्य को रचाने वाला कोई न कोई कलाकार, कोई शिल्पकार मुनिवरो! कोई गृढस्ति, जिसको हम विश्वकर्मा कहते हैं। कोई न कोई अवश्य सत्ता है। मुनिवरो! प्रकृति भी वास्तव में हमें प्रतीत होती है, प्रकृति भी है। बिना प्रकृति के प्रभु इस मानो संसार को नहीं रचा सकता। मुनिवरो! वास्तव में देखो, यह इसी की चेतनता से संसार प्रगतिशील हो रहा है। हमारे द्वारा जो ज्ञान और प्रयत्न की मात्रा आती है। मुनिवरो! राग और द्वेष, मुनिवरो! इच्छाएँ और क्षुधा और त्वचा इत्यादि मुनिवरो! देखो, हमारे द्वार पर नाना प्रकार के हमारे द्वार पर दुःखद संस्कार हैं। और भी मुनिवरो! देखो, यह शरीर मान, अपमान, यह सब एक मानव के लिए स्वाभाविकत्व हो जाता है। परन्तु यह स्वाभाविक प्रकृति के आवेशों से स्वभाव बन जाता है। जब यह प्रकृति, उसी को अच्छी प्रकार अर्पण कर लेती है

तो मुनिवरो! देखो, यह सभी कुछ इससे उत्पन्न हो जाते हैं और यह उसका अधिपति बन जाता है।

प्रभु की सत्ता

देखो, मैं इस शरीर चेष्टा (रचना) के ऊपर कोई वाक् नहीं प्रगट कराने आया। केवल यह कि यह जो आज जब नास्तिकवाद की सब वस्तु समाप्त हो जाती है इस संसार में, इस संसार को कोई रचाने वाला है, कोई नियम बना रहा है। मुनिवरो! देखो, बिना नियम के अनुसार मानव कोई कार्य भी नहीं कर सकता, कोई संचार नहीं होता। परन्तु उस प्रभु का इतना रचनात्मक यह ब्रह्माण्ड है, जो मुनिवरो! देखो, सूर्य को नियम में चला रहा है, चन्द्रमा को नियमित बना रहा है। मानो बेटा! देखो, एक ही तत्त्व अपनी निर्माणशाला में निर्णीत हो रहा है, वह अपना-अपना कर्तव्य करता चला जा रहा है, यह कोई न कोई नियम है, यह कोई न कोई नियम बनाने वाला अवश्य है। परन्तु उसके नियम इतने महा पूर्ण हैं, अपूर्ण नहीं, पूर्ण हैं, वह इतने पूर्ण कि हमारे कार्य अपूर्ण हो सकते हैं, परन्तु प्रभु का कार्य कोई भी अपूर्ण नहीं होता, वह पूर्ण होता है। मुनिवरो! सूर्य प्रातःकाल में उदय होता है, यदि सूर्य सायँ काल में उदय हो जाए, तो क्या हो, अन्धकार छा जाए, मनुष्य मात्र को, प्राणी मात्र को वह सत्ता नहीं प्राप्त हो सकती जिसे वह पान करना चाहता है। मुनिवरो! देखो, जब उसी सूर्य की किरण, सूर्य को कोई देता है, उसको भी कोई प्रकाश देता है, परन्तु वह परमात्मन् है। सूर्य से सहस्त्रों किरणें चलती हैं, उन सहस्त्रों किरणों का संसार में बेटा! जब आभास होता है, तो प्रत्येक प्राणी को सुखद में पहुँचाती चली जाती हैं। प्रातःकाल में सूर्य उदय हुआ, मेरी पवित्र माता अपने-अपने आसन को त्याग देती है। ऋषि मण्डल उससे पूर्व उससे अपने आसन को त्याग देता है। जो शावक होता है वह भी त्याग देता है, पक्षीगण भी त्याग दिया करते हैं सूर्य उदय होने से पूर्व।

जब सूर्य उदय होता है तो वह सबको एक जीवन सत्ता प्रदान करता चला जाता है। वह पवित्र वेला है, जिस पवित्र वेला में प्रत्येक प्राणी को शक्ति प्राप्त होती है। जहाँ-जहाँ उसकी किरणों का आभास हुआ, उसकी किरणों का प्रभाव पहुँचा, वहीं उन्हीं-उन्हीं स्थानों में एक प्रकाश की तरङ्गें ओत-प्रोत हो जाती हैं। मानव प्रकाशित होता है, जलचर भी प्रकाशित होते हैं, समुद्रों में भी जलचरों को, मार्ग में विचरण करने वाले सभी को सत्ता प्राप्त हो जाती है। मुनिवरो! वह सूर्य किरणों को निगल जाते हैं, जब सूर्य की किरण को निगल जाते हैं तो मुनिवरो! देखो, उससे मानव में एक नवीन सत्ता आती चली जाती है। उसी सत्ता को पान करने वाले, उसी सत्ता को प्राप्त करने वाले प्राणी संसार में जीवित रहते हैं और वह एक अनुपम उस देन को पान करते हैं जो वह प्रभु हमें देता है जिससे हमारा जीवन संचार होता है। जब हम जीवन के संचार, सब को विचार विनिमय करते हैं तो हमें यही प्रतीत होता है, ये उस प्रभु ने, उस मेरे आनन्ददायक देव ने यह चार वर्ण की क्या विचित्रता रची है।

सृष्टि का रचनात्मक चक्र

मेरे आदि आचार्यजनों! जब हम आस्तिकवादी यह विचारते हैं कि परमात्मा कोई चेतन सत्ता है, जिसकी रचना हमें नियम में प्रतीत हो रही है। तारामण्डल हैं वह नियम से, मुनिवरो! देखो अपनी प्रक्रिया कर रहे हैं, करते चले जाते हैं। परन्तु चैतन्य सत्ता से, प्रकृति में यदि चैतन्य सत्ता का मिलान न हो, तो यह शून्य रहती है, परन्तु इसमें क्रियात्मक होती है, और वह क्रियाशील रहती है। उसी क्रिया से, अनुकम्पनता से संसार में बेटा! प्रत्येक प्राणी का निर्माण होता है। प्रत्येक प्राणी एक दूसरे का सहायक होता चला जाता है। एक दूसरे का सहायक बनता है प्राणी, कोई किसी को अमृत देता है, कोई किसी के विष को ग्रहण करता है अपने में। मैंने बेटा! यह कई काल में

आदेश प्रगट किया, संसार में प्राणी, एक प्राणी द्वितीय प्राणी के अधीन बनाया है। मुनिवरो! जो सूर्य की पवित्र किरणें चलती हैं उन्हीं किरणों का प्रभाव, जब एक दुर्गन्धि त्यागता है एक प्राणी, उनको सुगन्धि प्रदान कर देती हैं, और जब मानव दुर्गन्ध, या कोई भी दुर्गन्ध त्यागता है कोई भी प्राणी, परन्तु वह ज्यों की त्यों तो नहीं, परन्तु सूर्य की किरणें अपने में शोषणित कर देती हैं। वायु के द्वारा, जल के द्वारा उसको शोषण कर लेती हैं, परन्तु उनका मिलान भी, उनका मन्थन भी किया जाता है। जब उसका, उस दुर्गन्ध का मन्थन किया जाता है उस दुर्गन्ध का मन्थन होकर उसका प्रसार भी किया जाता है। अब मुनिवरो! देखो, जहाँ मन्थन किया जाता है। मन्थन किस वस्तु का होता है? एक व्यक्ति वमन करता है, दुर्गन्ध को त्यागता है परन्तु उसी दुर्गन्ध को शोषण करने वाली भी कोई सत्ता है। दुर्गन्ध शोषण की जाती है, सुगन्धि आ जाती है। दुर्गन्धि समाप्त हो जाती है और वह दुर्गन्धि सूर्य की किरणों ने बेटा! अपने में वायु के द्वारा, जल के द्वारा उनका शोषण करके मन्थन हुआ। मन्थन हो करके उनका विभाजन हुआ, उनका विभाजन हुआ, अब जब उनका विभाजन हुआ तो मुनिवरो! जो उनमें से विष होता है, विष को पान करने के लिए, विषैले प्राणी होते हैं, वह विष को ही पान करते हैं। अमृत पान करने वाले जो प्राणी होते है वे अमृत को पान करते हैं और जिन्होंने विष को अपने में ग्रहण किया है, उन्होंने विष को क्यों पान किया, अमृत भी तो पान कर सकते थे? परन्तु अमृत वाले प्राणियों से उस विषैले प्राणी का इतना घनिष्ट सम्बन्ध है जिसका कोई प्रमाण नहीं। मुनिवरो! दुर्गन्ध को शोषण करता है, विष को शोषण करता है। क्यों करता है? यदि अमृतदायक जो प्राणी होता है उसको वह विष पान भी छू जाए, तो मुनिवरो! उसका अन्त हो जाता है। तो ये उस प्रभु की कितनी महानता है, इसमें एक वनस्पति इस प्रकार की है जो दुर्गन्ध को त्यागती है, द्वितीय वनस्पति इस प्रकार की है जो दुर्गन्ध को शोषण

कर लेती है और कुछ इस प्रकार की वनस्पतियाँ हैं, जो वनस्पति बेटा! दिवस के समय, दुर्गन्ध को त्यागती हैं और रात्रि के समय सुगन्ध को ग्रहण करती हैं। मानो देखो, अधिकतर वनस्पतियाँ इस प्रकार की हैं जो मुनिवरो! रात्रि के समय दुर्गन्ध को त्यागती हैं और दिवस के समय में सुगन्ध को अपने में शोषण करती हैं। अपने में सुगन्ध को त्यागती हैं, त्यागती ही रहती हैं, शोषण करती हैं, परन्तु वह उनकी सुगन्धि संसार में उनकी व्यापिकता में रमण कर जाती है। जब वही सुगन्ध देखो, यह उस परमात्मा का कितना बड़ा परिवार है, कितना बड़ा समाज है उस परमात्मा का उस मेरे परमानिधायक का कितना ऊँचा सिद्धान्त और उसकी रचनात्मक है। उसी के परिवार में मानव को विचित्र बना दिया, परन्तु यह परिवार, एक ऐसा विशाल और मानवता की भूमि पर विराजमान हो जाता है जहाँ एक मानव को इन सर्वत्र प्राणियों में सर्वोपरि बनाया है। क्यों बनाया? कर्म करने के लिए, दूसरों की निन्दा करने के लिए नहीं, दूसरों को अपशब्द उच्चारण करने के लिए नहीं, केवल मानवता को प्राप्त करने के लिए उत्पन्न किया। और इतनी सुगन्धि वनस्पतियों से उत्पन्न होती है जितनी दुर्गन्धियों को विषैले प्राणी विष को शोषण करते हैं। मानो ये विष को तो शोषण करते हैं, सुगन्ध को त्यागते हैं, क्यों? आगे यह प्रतीत है, कि प्रभु ने ऐसी योनियाँ रचाई हैं जिसके लिए हम सब सहायक हैं।

मनुष्य योनि की महत्ता

मुनिवरो! अब यदि प्राणी ने यहाँ आ करके भी मानवता पर विचार विनिमय नहीं किया, तो बेटा! यह तुम्हें प्रतीत होगा अगला जन्म इसे कहाँ प्राप्त हो सकेगा, कौन सी योनियों में जाएगा, परन्तु उन योनियों में पहुँचेगा जिनमें कर्म शून्य है। आज मानव अपने भोग विलासों में परणित रहता है। बेटा! महानन्द जी ने मुझे वर्णन कराया– अपने ऐश्वर्य में आनन्दित रहता है, दूसरों की निन्दा स्तुता में परणित

रहता है, एक दूसरे को नष्ट करने की उसकी प्रवृत्ति बन जाती है। मुनिवरो! देखो, एक दूसरें में प्रीति नहीं होती। आज यह सब जिन प्राणियों में आ जाती है तो उसका विनाश तो हो ही जाता है। मुनिवरो! देखो, यह प्रवृत्ति पशु पक्षियों में भी है, उनमें मोह ही नहीं होता है, मुनिवरो! देखो, उनमें विषय वासना भी होती है, क्रोध भी होता है, काम भी होता है, नाना प्रकार की और भी प्रवृत्तियाँ होती हैं। मुनिवरो! और उन पशु पक्षियों में सभी कुछ होता है, केवल एक ही वस्तु नहीं होती, केवल ज्ञान नहीं होता, उनमें ज्ञान नहीं होता। प्रिय, अप्रिय वस्तु को अच्छी प्रकार जानता तो है, परन्तु इतना पूर्ण रूप से नहीं। पशु पक्षी यह भी जानता है कि ये तेरा स्वामी है, यह तेरा मित्र है, यहाँ तक भी जानता है। परन्तु एक ही वस्तु इनमें नहीं कि इनमें कहाँ तक यह जानते हैं, प्रभु की देन के अनूकुल जानते हैं, अपने कर्मों के अनूकुल जानते हैं। परन्तु इनमें इतना विकास नहीं कि आगे चल करके यह प्रभु के आङ्गन में चलें और अपने जीवन का विकास करें। **यदि विकास उन्हें प्राप्त होगा, तो केवल एक मनुष्य की योनि में प्राप्त होगा,** इसमें विकासदायक वह तत्त्व हैं, वह कण हैं जिससे मानव का विकास और मानव की प्रगति होगी। मुनिवरो! **योगाभ्यास और परमात्मा के प्राप्त करने में मानव में संलग्नता रहती है।** यह ही एक मानव में विशेषता है और मानव में कोई विशेषता नहीं है। यदि कोई विशेषता है, पशु पक्षियों से भिन्न, यदि कोई एक विशेषता है, क्या? इसमें ज्ञान है, प्रगतिशील बनने की इसमें मनोकामनाएँ, इच्छाएँ करता है, प्रभु के द्वारा जाने का भी सर्वश प्रयत्न करता है। मुनिवरो! जब हम चन्द्र मण्डल और सूर्य मण्डल की प्रगति और वहाँ अग्नि तत्त्व प्रधानता को दृष्टिपात करते हैं, तो प्रभु की और ही विचित्रता प्रतीत होती है। हमारा यह पृथ्वी मण्डल प्रभु ने रचा, जिसमें बेटा! मनुष्य विशेषकर महानता को लिए हुए रहता है, उनको अपने आधीन बनाएँ रहता है। अरे! जैसे तुम इनके आधीन हो, तुम्हारे

ये आधीन हैं, तुम इनके आधीन रहते हो, परन्तु वह सूक्ष्म रूप से रहते हैं, इसमें ज्ञान होने के नाते, यह उनमें तो ये सभी तो स्वतंत्र माने हैं, विराजमान हैं। परन्तु यह उनके आधीन भी हैं, प्रभु के नियम के अनुकूल, यदि सर्प योनि विष को पान न करें, तो यह विष मानव को छू-छू करके मानव का अङ्ग-भङ्ग हो सकता है। बेटा! यदि जल में मछली न हों, मच्छ न हों, तो बेटा! जल में इतनी दुर्गन्ध, इतना अनर्थ हो जाएँ परन्तु जल में इतना विष उत्पन्न हो सकता है कि पुरूष पान करके मृत्यु को प्राप्त हो सकता है।

... क्रमशः

दिनाँक : 30 अक्टूबर, 1965
समय : रात्रि 8 बजे
स्थान : आर्य समाज जङ्गपुरा, नई-दिल्ली

नम्र-निवेदन

पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज ने अपने प्रवचनों में वेदमन्त्रों का गान करते हुए उनकी प्रचलित भाषा में व्याख्या की है। उसी अमृत वाणी को जनकल्याण के लिए ''सँहिता'' रूप में प्रकाशित करने के लिए वैदिक अनुसन्धान समिति सभी श्रद्धालु एवम् दानदाताओं से सहयोग के लिए आह्वान करती है जिससे कि प्रकाशन का कार्य सुचारू रूप से ऊर्ध्वा गति को प्राप्त होता रहे। सहयोग की राशि समिति के बैंक खाते में स्वेच्छानुसार भेजने के लिए बैंक का विवरण निम्न प्रकार से है–

वैदिक अनुसन्धान समिति (पञ्जी.) **PAN No. – AAAAV7866J**
पंजाब नैशनल बैंक, खान मार्केट, नई दिल्ली
बैंक खाता नं. - 0149000100229389, IFSC Code – PUNB–0014900
website : www.shringirishi.in
Email : contact@shringirishi.in

॥ ओ३म् ॥

ऋषियों के उद्‌गार

1. मानव के लिए सत्य-असत्य को जानना ही मानव का सबसे बड़ा धर्म है।
2. सत्य को विचारने के लिए अपने को विचारा जाता है कि मैं सत्य हूँ या नहीं।
3. हमारे वेद में दो प्रकार के यज्ञों का वर्णन आता है एक आत्मिक यज्ञ होता है दूसरा भौतिक यज्ञ।
4. भौतिक यज्ञ कैसे करें? तो सबसे पूर्व यज्ञ को विधान से रचाओ।
5. बिना विधान यज्ञ करने से यज्ञ न करने के बराबर हो जाता है।
6. सूक्ष्म यज्ञ रचाओं या विशाल यज्ञ, उसके लिए पहले से ही उच्च विधान बनाने की आवश्यकता है।
7. हम जब तक किसी ऊँचे व्यक्ति के लिए या ऊँचे देवताओं के लिए सुन्दर कार्य नहीं करते, तब तक देवता हमें न कोई महत्त्व, न वाणी, न प्रकाश, न प्राण ही प्रदान करेंगे।
8. यदि तुम शरीर को अशुद्ध भोजन देते रहोंगे तो यह तुम्हारा शरीर रूपी यज्ञ नष्ट हो जाएगा।
9. यज्ञ करो पूर्ण विधान से करो। धर्म से करो, दुर्भावना मत करो।
10. मानव को कार्य करने से पूर्व उसका महान् विधान बना लेना चाहिए।
11. ऊँचे कर्म करोंगे तभी तुम्हारी आत्मा बलवान् होगी।
12. आत्मा की दो महान सत्ताएँ है एक ज्ञान और दूसरा प्रयत्न।
13. आत्मा का ज्ञान स्वाभाविक है उसको जगाने के लिए वेद विद्या को ग्रहण करना पड़ेगा।
14. यह महान संसार उस परमात्मा को पाने के लिए बनाया है।
15. आत्मा का प्रकाश भी परमात्मा का दिया हुआ है।
16. बिना वेद के प्रचार के राष्ट्र के मानवों में कभी सात्विक बुद्धि नहीं आती।
17. वेद-वाणी का उच्चारण करना उसी काल में सफल होता है जब हम उसके अनुकूल अपने आचरण को बना लेते हैं।

।। ओ३म् ।।

। कृण्वन्तो विश्वमार्यम् ।

पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज

राष्ट्र कल्याणार्थ चतुर्थ चतुर्वेद ब्रह्म पारायण महायज्ञ एवम् योग साधना शिविर

दिनांक 23 दिसम्बर 2018 रविवार से 30 दिसम्बर 2017 रविवार तक
ग्राम खरखौदा यज्ञस्थली मौहल्ला तिहाई (मुण्डा महादेव मन्दिर के पास)

–: निमन्त्रण पत्र :–

प्रिय आत्मीय स्वजनों,

परमपिता परमात्मा की असीम अनुकम्पा से एवम् पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज (पूर्व जन्म के शृङ्गी ऋषि जी) की पावमानी प्रेरणा से प्राणी मात्र के जीवन को तीव्रता से बढ़ते हुए प्रदूषण से निवारण करने के लिए और जीवन सत्ता को सम्पन्न बनाने के लिए **''चतुर्थ चतुर्वेद ब्रह्म पारायण महायज्ञ''** का आयोजन **''याग प्रचार समिति''** ग्राम खरखौदा द्वारा आप सबके सहयोग से अत्यन्त श्रद्धा व हर्षोल्लास से पाँच यज्ञवेदियों पर वैदिक परम्परा आदि ऋषियों द्वारा निर्धारित कर्मकाण्ड पद्धति अनुसार सम्पन्न होगा। अतः आपसे नम्र निवेदन है कि इस महायज्ञ में प्रातः व सायँ समयानुसार अपने परिवार, सम्बन्धी व मित्रों सहित उपस्थित होकर तन, मन, धन से आहुति प्रदान करके अपने जीवन के मार्ग को प्रशस्त करते हुए, जीवन में आने वाले उद्देश्य की ओर अग्रसित होते हुए ऊर्ध्वागति में संलग्न रहें।

यज्ञ के ब्रह्मा – आचार्य श्री गुरुवचन शास्त्री जी, लाक्षागृह, बरनावा।

आचार्य एवम् वेदपाठी – श्री महानन्द संस्कृत महाविद्यालय लाक्षागृह, बरनावा के ब्रह्मचारीगण।

आमन्त्रित पूज्यनीय सन्यासी – महामण्डलेश्वर स्वामी असङ्गानन्द जी महाराज, परमार्थ निकेतन ऋषिकेश एवम् पूज्य प्रणव जी महाराज गौतमनगर, नई दिल्ली।

आमंत्रित विद्वतगण – श्री माया प्रकाश जी, श्री विनोद कुमार शास्त्री प्रधानाचार्य।

–: कार्यक्रम :–

दिनांक 23 दिसम्बर 2018 से 29 दिसम्बर 2018 तक

प्रातः 7:15 बजे ओ३म् ध्वजारोहण (प्रथम दिवस) एवम् ब्रह्मयज्ञ (संध्या)

प्रातः 8:00 बजे से **11:15 बजे** तक यज्ञ व प्रवचन

सायं: 2:15 बजे से **5:15 बजे** तक यज्ञ व प्रवचन

दिनांक 30 दिसम्बर 2018 प्रातः

प्रातः 8:00 बजे से **11:00 बजे** तक यज्ञ और महायज्ञ की पूर्णाहुति तत्पश्चात् प्रवचन एवं आर्शीवाद शान्ति पाठ व ब्रह्मभोज। **निवेदक समस्त खरखौदा निवासी**

योगनिष्ठ पूज्यपाद ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज (शृङ्गी ऋषि जी) की अमृतवाणी संहिता के रूप में

*1.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 1)	80.00
*2.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 2)	80.00
3.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 3)	60.00
*4.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 4)	100.00
5.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 5)	60.00
6.	Yogic Wisdom of Ancient Rishis	80.00
7.	वेद पारायण-यज्ञ का विधि विधान	25.00
8.	आत्म-लोक	35.00
*9.	धर्म का मर्म	40.00
10.	शंका-निवारण	35.00
11.	यज्ञ-प्रसाद अर्थात् यज्ञ का महत्त्व	40.00
12.	आत्मा व योग-साधना	35.00
*13.	देवपूजा	50.00
14.	अतीत का दिग्दर्शन (भाग 1)	125.00
15.	अतीत का दिग्दर्शन (भाग 2)	125.00
16.	अतीत का दिग्दर्शन (भाग 3)	125.00
17.	रामायण के रहस्य	35.00
18.	यज्ञ एवं औषधि विज्ञान	45.00
19.	महाभारत के रहस्य	30.00
20.	अलङ्कार-व्याख्या	35.00
21.	रावण-इतिहास	60.00
22.	महाराजा-रघु का याग	30.00
23.	वनस्पति से दीर्घ-आयु	35.00
24.	मोक्ष प्राप्ति का मार्ग	35.00
25.	चित्त की व वृत्तियों का निरोध	35.00
26.	आत्मा, प्राण और योग	35.00
27.	पञ्च-महायज्ञ	35.00
28.	अश्वमेघ-याग और चन्द्रसूक्त	40.00
29.	याग-मन्जूषा	40.00
30.	आत्म-दर्शन	30.00
31.	पुत्रेष्टि-याग और मात-दर्शन	30.00
32.	याग और तपस्या	60.00
33.	यागमयी-साधना	35.00
34.	यागमयी-सृष्टि	35.00
35.	याग-चयन	40.00
36.	दिव्य-रामकथा	120.00
37.	ज्ञान-कर्म-उपासना	35.00
38.	दिव्य-ज्ञान	40.00
*39.	महाभारत एक दिव्य दृष्टि	90.00
40.	महर्षि-विश्वामित्र का धनुर्याग	40.00
41.	आत्म-उत्थान	40.00
*42.	तप का महत्त्व	40.00
43.	अध्यात्मवाद	40.00
44.	ब्रह्मविज्ञान	40.00
45.	वैदिक-प्रभा	35.00
46.	प्रकाश की ओर	35.00
47.	कर्तव्य में राष्ट्र	40.00
48.	वैदिक-विज्ञान	35.00
49.	धर्म से जीवन	35.00
50.	आत्मा का भोजन	40.00
51.	साधना	35.00
52.	त्रेताकालीन-विज्ञान	40.00
53.	यज्ञोमयी-विष्णु	40.00
54.	यौगिक प्रवचन माला भाग-6	80.00
55.	स्वर्ग का मार्ग	50.00
*56.	यौगिक प्रवचन माला भाग-7	80.00
57.	माता मदालसा	60.00
*58.	यौगिक प्रवचन माला भाग-8	80.00
*59.	यौगिक प्रवचन माला भाग-9	80.00
60.	यौगिक प्रवचन माला भाग-10	80.00
61.	याग एक सर्वाङ्ग पूजा	80.00
62.	यौगिक प्रवचन माला भाग-11	80.00
*63.	यौगिक प्रवचन माला भाग-12	80.00
64.	मानव कल्याण की चर्चाएँ	50.00
65.	प्रभु-दर्शन	50.00
*66.	यौगिक प्रवचन माला भाग-13	80.00
*67.	समाज उत्थान का मार्ग	50.00
*68.	यौगिक प्रवचन माला भाग-14	80.00
*69.	ब्रह्म की ओर	50.00
*70.	ईश्वर मिलन	50.00
*71.	यौगिक प्रवचन माला भाग-15	80.00
*72.	यौगिक प्रवचन माला भाग-16	80.00
*73.	नैतिक शिक्षा	50.00
*74.	यौगिक प्रवचन माला भाग-17	100.00
*75.	आत्मिक ज्ञान	60.00

*सहजिल्द का मूल्य 20 रु. अतिरिक्त है।

पुस्तक प्राप्ति के स्थान

योगनिष्ठ पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज की अमृतवाणी का साहित्य सँहिता, कैसेट्स, सी. डी. व डी. वी. डी. के रूप में निम्न स्थानों पर उपलब्ध है–

1. श्री महानन्द संस्कृत महाविद्यालय, लाक्षागृह, बरनावा, जिला–बागपत, (उ.प्र.)। मोबाइल नं 09719622950
2. श्री गुरुवचन शास्त्री, मकान नं. 165/30ए, दक्षिण भोपा रोड़, निकट माढ़ी की धर्मशाला, नई मण्डी, मुजफ्फरनगर (उ. प्र.)। मोबाइल नं. 09412888050
3. सुश्री. नीरू अबरोल, के-3 लाजपत नगर-3, नई दिल्ली। दूरभाष नं. 011-41721294
4. डॉ. मधुसूदनेश्वर प्रकाश, A-59 पंचशील एन्क्लेव नई दिल्ली-110017 दूरभाष नं. 011-41030481
5. श्री जितेन्द्र चौधरी, ए-84, मालवीय नगर, नई दिल्ली-110017, मो. नं. 9811707343
6. श्री अनिल त्यागी सी-47 रामप्रस्थ, गाजियाबाद (उ.प्र.)। दूरभाष नं. 0120-4165802
7. श्री आशीष त्यागी, सुपुत्र श्री सुशील त्यागी डी-293, रामप्रस्थ, पोस्ट ऑफिस चन्द्रनगर, गाजियाबाद पिन कोड-201011 (उ.प्र.)। दूरभाष नं. 0120-2642052
8. श्री लोमश त्यागी, 106/4 पंचशील कालोनी गढ़ रोड़, मेरठ, (उ.प्र.) मोबाइल नं. 09410452076
9. श्री शमीक त्यागी, 16ए, आलोक कॉलोनी, अल्कापुरी, हापुड़, (उ.प्र.)। दूरभाष नं. 0122-2316196
10. श्री संजीव त्यागी, 1107, सैक्टर-3, बल्लभगढ़, फरीदाबाद हरियाणा। मोबाइल नं. 09910589486
11. मैं. हर्ष मेडिकोज, ए-2/31, सैक्टर-110–मार्किट नोएडा, फेस-2, (उ.प्र.) मोबाइल नं. 9899228860, 9871367937
12. श्री पवन त्यागी सुपुत्र श्री राजाराम त्यागी, मौ. खड़खड़ियान, माता, ग्राम खरखौदा, जिला मेरठ (उ.प्र.) मोबाइल नं. 7536097171
13. श्री प्रदीप त्यागी सुपुत्र श्री महेश त्यागी, रघुनिवास 138 सर्वोदय कालोनी, मेरठ रोड़, हापुड़ (उ.प्र.) मोबाइल नं. 9758330473
14. डॉ. अशोक कुमार आर्य, आर्यावर्त कालोनी निकट मुरादाबादी गेट, अमरोहा, जिला-जे. पी. नगर (उ.प्र.) मोबाइल नं. 09412139333
15. श्री सुमन कुमार शर्मा, जे-380, सैक्टर बीटा-2, ग्रेटर नोएडा, (उ.प्र.) मोबाइल नं. 09313530505
16. श्री सतीश भारद्वाज, ग्राम बहेडी, रोहाना मिल, जिला मुजफ्फरनगर (उ.प्र.)।
17. मैं. विजय कुमार, गोविन्द राम हासानन्द, 4408, नई सड़क, दिल्ली। दूरभाष नं. 011-23977216

मासिक सहयोग

श्री हरीराम गुप्ता, केसर स्टील, वजीरपुर, दिल्ली	1000 रुपये
श्री चिंतामणि त्यागी एवं श्री जगमोहन त्यागी बरला, मुजफ्फरनगर	1000 रुपये
श्री संजीव त्यागी (दिनकरपुर) फरीदाबाद, हरियाणा	1000 रुपये
श्री ज्ञानेश द्विवेदी	1000 रुपये
श्री अरुण त्यागी, राजनगर, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश	500 रुपये
श्री विनोद त्यागी सुपुत्र श्री जयप्रकाश त्यागी मकनपुर, गाजियाबाद	500 रुपये
मा. कार्तिक त्यागी सुपौत्र श्री रामनिवास त्यागी ग्राम भंगेल, नोएडा	251 रुपये
मा. लोमश त्यागी सुपौत्र श्री रामनिवास त्यागी ग्राम भंगेल, नोएडा	251 रुपये
डॉ. शुचि, डॉ. राजीव चावला, आणद, गुजरात	250 रुपये
श्री राकेश शर्मा, विराट नगर, पानीपत, हरियाणा	250 रुपये
श्री कृष्ण लाल बत्रा, इन्द्री, जिला करनाल	201 रुपये
मास्टर कवन्धि त्यागी, रामप्रस्थ, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश	101 रुपये
मास्टर सिद्धार्थ त्यागी, अँकुर अपार्टमैन्ट, पटपड़ गंज दिल्ली	101 रुपये
कुमारी अञ्जलि त्यागी, रामप्रस्थ, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश	101 रुपये
मास्टर सात्विक त्यागी, अँकुर अपार्टमैन्ट, पटपड़ गंज दिल्ली	101 रुपये
मास्टर अभ्युदय त्यागी, न्यू जर्सी, अमेरिका	101 रुपये
श्री संजय उर्फ टीटू सुपुत्र श्री सोमदत्त त्यागी, तलहटा	100 रुपये

॥ ओ३म् ॥

चतुर्वेद ब्रह्म पारायण महायज्ञ

परमपिता परमात्मा की असीम अनुकम्पा से एवम् पूज्यपाद गुरुदेव **ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी** महाराज की पावमानी प्रेरणा से चतुर्वेद ब्रह्म पारायण महायज्ञ का आयोजन वैदिक याग समिति गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश के द्वारा **दिनाँक 18 नवम्बर 2018** से **25 नवम्बर 2018** तक सेक्टर नं. 23 संजय नगर, गाजियाबाद के रामलीला मैदान के प्राङ्गण में अत्यन्त हर्षोल्लास के साथ आयोजित किया जा रहा है। जिसमें आप सभी याज्ञिक प्रेमी अपने परिवार, इष्ट मित्रों व सम्बन्धियों सहित सादर आमन्त्रित हैं। यज्ञ की ज्योति को बल प्रदान करने के लिए आपकी आहुति द्वारा यज्ञ का समापन होना अपेक्षनीय है। **आयोजक व निवेदक :** आप और हम।

योगमुद्रा में प्रवचन करते हुए पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज

उद्‌बोधन

आओ आज हम उच्चारण करते चले जाएँ, कि वह देव की, जो अनुपम देन है वह जो अनुपम प्रकाश है, उसमें नाना प्रकार का ज्ञान और विज्ञान आता है और नाना प्रकार की प्रतिभा उसमें हमें विराजमान होती प्रतीत होती है। आज हम उस महान् देव, वेदवाणी में ही, प्रभु की आनन्दमयी जो देन है उसका अनुवाद करते हुए, वेद का ऋषि कहता है आचार्य कहता है हे महा प्रभु! अकृते! तू वास्तव में हमारा कल्याण करने वाला है, जीवन को उदबुद्ध करने वाला है। तेरी ही महती, अनुपम कृपा से यह हमारा जीवन उदबुद्ध हो रहा है।

पूज्यपाद-गुरुदेव

वर्ष 47 : अंक : 554
नवम्बर 2018

मूल्यः
दस रुपये

RNI No. 23889/72
Delhi Postal R. No. DL (S)-01/3220/2018-2020
Licence to Post without prepayment
U (SE)-70/2018-2020
POSTED AT N.D.PS.O ON 10/11-11-2018
Published on 5th day of the same month